चन्दामामा
जनवरी १९६४
VAPA

हमदर्द
दिल्ली • कानपुर • पटना
नौनिहाल
बच्चों को प्रसन्न रखता है।
बच्चों को दाँत निकलते समय होनेवाली तकलीफों में और उनके स्वास्थ्य के विकास के लिए नौनिहाल ग्राइप सिरप और नौनिहाल बेबी टानिक फायदेमंद होता है।
HDN

केवल विक्स वेपोरब ही
सर्दी-ज़ुकाम से जकड़े तीनों भागों पर तुरंत असर करता है...

सर्दी-ज़ुकाम को रातोंरात दूर करता है

विक्स वेपोरब सारी रात दो तरीकों से नाक, गले तथा छाती में असर करता है — आपको सर्दी से हुई परेशानियों से आराम पहुंचाता है। आप आसानी से सांस लेने लगते हैं और चैन की नींद सोते हैं।

सर्दी के लक्षण (जैसे नाक का बहना, गले की खराश, खांसी, छाती में जकड़न) दिखायी पड़ते ही तुरंत विक्स वेपोरब इस्तेमाल कीजिये। केवल विक्स वेपोरब ही सर्दी-ज़ुकाम से जकड़े सभी तीनों भागों — नाक, गले तथा छाती में तुरंत असर करता है और आपको सर्दी-ज़ुकाम के सभी कष्टों से रातोंरात आराम दिलाता है। सोते समय विक्स वेपोरब नाक, गले, छाती तथा पीठ पर मलिये। तुरंत ही आप विक्स वेपोरब की गरमाहट महसूस करने लगते हैं। साथ ही साथ आपके शरीर की सामान्य गरमी से वेपोरब शीघ्र ही औषधियुक्त भाप में बदल जाता है। यह भाप सारी रात आपके हर श्वास के साथ भीतर जाती रहती है। जबकि आप चैन की नींद सोते हैं यह आश्चर्यजनक द्विविध क्रिया जहां सर्दी की तकलीफ सबसे ज़्यादा है वहां आपकी नाक, गले तथा छाती में गहराई तक होती रहती है। सुबह तक आपका सर्दी-ज़ुकाम जाता रहता है और आप फिर से खुश और स्वस्थ हो जाते हैं।

विक्स वेपोरब

सारे परिवार के लिए गुणकारी — पुरुषों, महिलाओं और बच्चों

बिन्नी का
केसमेंट
क्लाथ
वी. ५५८६
स्कूल की वर्दी
के लिये बिल्कुल ठीक

आधुनिक गृहणी के लिए वरदान!

...पाण्डवों के वनवास के दिनों में, द्रौपदी ने मुनियों को, और उनके अनुयायी और अतिथियों को, एक ऐसे आश्चर्यजनक "अक्षयपात्र" से भोजन परोसा था...जिसमें भोजन कभी कम न होता था। पाण्डवों की अपनी हालत ही जंगलों में अच्छी न थी। कठिनाई से भोजन मिलता। यदि सूर्य देवता, समय पर द्रौपदी को वर न देते, तो द्रौपदी के चिन्ताओं की सीमा न रहती।

अतिथियों के सत्कार के लिए और घर के वासियों के लिए..."सन" वॅक्यूम जग, हर एक गृहणी के लिए, वस्तुतः आधुनिक "अक्षयपात्र" है।

विक्टरी फ्लास्क कं. प्राईवेट लिमिटेड,

बम्बई - कलकत्ता - दिल्ली - मद्रास

SUN

मेरे
हमेशा से
मनपसन्द
साठे
बिस्कुट
ISI

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

यह नव वर्ष का प्रथम मास है। आप सब हमारी शुभकामनायें स्वीकृत कीजिये।

प्राय: नव वर्ष के प्रारम्भ में हम कुछ नये प्रण करते हैं। करने भी चाहिए। और आपने भी किये होंगे।

भारत पर आक्रमण की आशंका अभी पूरी तरह नहीं गई है। कहना न होगा, हमें हमेशा सन्नद्ध रहना होगा। इसके लिए हमेशा सशक्त बनना होगा।

आप भी हमारे साथ प्रण कीजिये कि हम देश की सुरक्षा के लिए कुछ न अछूता छोड़ेंगे। भरसक प्रयत्न करेंगे।

वर्ष: १५ जनवरी १९६४ अंक: ५

भारत का इतिहास

तुगलक की मूर्खतापूर्ण योजनाओं ने जनता को बहुत उकसा दिया। कई जगह कई बगावतें हुईं। शासन शिथिल हो गया, सुल्तान का क्रोध बढ़ता गया और साम्राज्य छिन्न होने लगा। पहिली दो बगावतों को सुल्तान ने आसानी से काबू कर लिया। पहिली बगावत करनेवाला, सागर का सामन्त, बहरुद्दीन गुर्शाप्स था। यह घियासुद्दीन का भान्जा था, १३२६ या १३२७ में यह बगावत हुई, सुल्तान ने इसका दमन किया। उसने बहुरुद्दीन की चमड़ी उखड़वा दी। "राजद्रोहियों की यही हालत होती है।" उसने यह घोषणा करवा दी। अगले वर्ष ही मुल्तान, सिन्ध आदि के शासक बहरा ऐब ने और जोर से विद्रोह किया। सुल्तान ने उसको हराया। उसका सिर कटवाकर, उसने मुल्तान के किले पर लटकवा दिया।

इसके बाद विद्रोह कम न हुए, बढ़ते ही गये। १३३५ में हिन्दू सामन्त, मुस्लिम गवर्नर एक एक करके अपनी स्वतन्त्रता घोषित करने लगे। माबार के गवर्नर ने अपने नाम से सिक्के भी चलाये। सुल्तान उसका दमन करने के लिए, सेना के साथ गया, पर रास्ते में ही हैजा फैल गया, इस प्रकार मदुरा में मुस्लिम राज्य, विजयनगर द्वारा पराजित होने तक १३७७-७८ तक कायम रहा।

१३३८ में बंगाल के गवर्नर फ़ख़ुद्दीन मुबारक शा ने अपने को स्वतन्त्र घोषित किया और अपने नाम से उसने सिक्के भी चलाये। १३५०-५१ में अयोध्या, जफराबाद के गवर्नर आइनलमुल्क का

विद्रोह और भी प्रबल था। १३५२ में इस विद्रोह का दमन तो कर दिया गया, पर राज्य निश्शक्त हो गया था, सुल्तान की शक्ति भी सीमित हो गई थी।

सुल्तान की समस्यायें समाप्त न हुईं। तेलंगाना में प्रोलय नायक ने और उसके बाद कायम नायक ने मुसल्मानों का मुकाबला करके हिन्दू शासन की व्यवस्था की। होयसल राजा, तृतीय वीर बल्लाल ने उनकी मदद की, कृष्णा नदी के किनारे भी इसी तरह के विद्रोह हुए। दक्षिण में बिजय नगर व अन्य हिन्दू राज्यों की स्थापना हुई। १३५७ में देवगिरि में विद्रोह हुआ और वहाँ बहमनी राज्य की स्थापना हुई।

विद्रोहियों का दमन करने के लिए तुगल्क इधर उधर भागता रहा और आखिर १३५१ मार्च २० को वह मर गया। बदायुनी ने लिखा है कि यों "प्रजा को सुल्तान का आतंक और सुल्तान का प्रजा का आतंक, समाप्त हुआ।"

मोहम्मद बिन तुगल्क के अचानक मर जाने के कारण, कहीं सेना में खलबली न मच जाये, कमजोरी न हो जाये, यह

सोचकर बड़े बुजुर्गों ने फिरोज़ शा को सुल्तान बनाया। इस बीच दिल्ली में, लोगों ने एक लड़के को तुगलक का लड़का बताकर, गद्दी पर बिठाया। परन्तु उस लड़के ने ही बाद में फिरोज़ को सुल्तान माना और उसकी शरण माँगी। फिरोज़ समर्थ न था और तुगल्क के आखिरी दिनों में जो अराजकता फैल गई थी, वह उसका अन्त न कर सका। साम्राज्य में से कुछ प्रान्त अलग हो गये। फिरोज़ को युद्ध का अनुभव न था। फिर भी उसने युद्ध किये। कई बार विजय मिलने को ही

थी, कि मैदान छोड़कर चला आया। इसका नगर कोट युद्ध एक बात के लिए प्रसिद्ध है। उस समय, उसने ज्वालामुखी मन्दिर में रखे ३०० संस्कृत ग्रन्थों का फ़ारसी में अनुवाद करवाया।

यह कट्टर मुसलमान था। उसने हिन्दुओं पर अत्याचार किया। उसने अपने को मिश्र के खलीफ़ा का सामन्त बताया। पहिले किसी दिल्ली के सुल्तान ने यह नहीं किया था। इसने लोगों को इस्लाम स्वीकार करने के लिए भी प्रोत्साहित किया।

फिरोज का खानिजहान मकबूल नाम का एक मन्त्री था। यह तेलंगाना का हिन्दु था। इसने इस्लाम धर्म स्वीकार किया। मोहम्मद बिन तुगलक के ज़माने में यह राजकर्मचारी बना और फिरोज शा के समय में यह मन्त्री बन गया। उसी की चतुराई के कारण ही राज्य चलता रहा। १३७० में जब इसकी मृत्यु हो गई, तो इसका लड़का जान शा इसके पद पर आया।

फिरोज ने ३७ वर्ष शासन किया। यह कहना होगा कि शासन में लोग सुखी थे। मँगोलों का कोई आक्रमण नहीं हुआ। सिंचाई, आदि की सुविधायें अधिक हुईं। किसानों की हालत सुधरी। उसने बहुत-से नगर बनवाये। जौनपुर, फतेहाबाद, हिस्सार, फिरोजपुर, फिरोजाबाद आदि उसी के बनाये हुए नगर हैं। उसने दिल्ली में और उसके आसपास १२०० बाग बनवाये।

अन्तिम दिनों में फिरोज विक्षिप्त हो गया। इसका कारण १३७४ में उसके बड़े लड़के की मृत्यु थी। १३८८, २० सितम्बर को फिरोज की मौत हो गई।

महाभारत

पाण्डवों ने वह रात आराम से आश्रम में काट दी। वे अपनी माँ के चारों ओर सो रहे।

अगले दिन भी वे धृतराष्ट्र के साथ ही रहे और उन्होंने भी उन्हीं का खाना खाया।

तीसरे दिन नित्यकृत्यों से निवृत्त होकर, धृतराष्ट्र की अनुमति लेकर युधिष्ठिर अपने भाइयों, अंतःपुर की स्त्रियों और बाकी लोगों को लेकर वह प्रान्त देखने निकल पड़े। एक जगह मुनि हवन कर रहे थे। एक और जगह वेद पठन हो रहा था। एक और जगह कन्द मूल के ढेर पड़े थे।

युधिष्ठिर अपने साथ हस्तिनापुर से जो सोने के पात्र, ताम्बे के पात्र, चर्म, कम्बल आदि लाये थे, उन्हें उन्होंने वहाँ के निवासियों में बाँट दिये। फिर वे गान्धारी और धृतराष्ट्र के पास आकर बैठ गये। उनके पास ही कुन्ती बैठी थी। युधिष्ठिर के पास आकर बाकी पाण्डव बैठ गये।

इतने में वहाँ कुरुक्षेत्र में रहनेवाले शतयूप आदि आये। उसी समय अपने शिष्यों के साथ व्यास भी आये। सब ने जाकर उनकी अगवानी की। दर्भासन पर बिछे मृगचर्म पर बैठकर व्यास ने धृतराष्ट्र से कुशल प्रश्न किये। फिर उन्होंने विदुर की बात उठायी और बताया कि वे यम थे, जिन्होंने माण्डव्य के शाप के कारण मानव जन्म लिया था। परन्तु वे अपने योग बल के कारण युधिष्ठिर में एकसात्

हो गये थे और इस कारण उस समय युधिष्ठिर ही विदुर थे।

तब उन्होंने धृतराष्ट्र से कहा—"मैं आपके सन्देह निवारण करने के लिए ही आया हूँ। जो कुछ पूछना है, पूछिये। क्या जानना चाहते हैं? क्या देखना चाहते हैं? कहिये।"

व्यास के यह कहने पर, गान्धारी जिसने आँखों पर पट्टी बाँध रखी थी, उठी और व्यास को नमस्कार करके कहा—"महात्मा, हमारे लड़कों के गुज़रे सोलह वर्ष हो गये हैं। तो भी अभी तक इनका पुत्र शोक नहीं गया है। उन पुत्रों को जो अब अन्यत्र किसी और लोक में हैं, यदि दिखा सकें तो दिखाइये। यह रही द्रौपदी, यह भी अपने लड़कों और सम्बन्धियों को खोकर दुखी है। सुभद्रा अभिमन्यु के लिए दुखी है। यह है भूरिश्रव की पत्नी, जो एक साथ अपने मामा और पति को खो बैठी थी। हमारी सौवों बहुओं का तो कहना ही क्या?"

गान्धारी यह बात कह रही थी कि कुन्ती को कर्ण याद हो आया और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

व्यास ने उसके दुख का अनुमान करके पूछा—"देवी, बताओ तुम्हारे मन में क्या है?"

तब कुन्ती ने कर्ण के जन्म के बारे में व्यास से इस प्रकार कहा—"दुर्वासा मेरे पिता के घर भिक्षा के लिए आये। वे बड़े कोपी थे। उनके क्रोध का ख्याल करके मैंने ऐसा व्यवहार किया कि उनका मन सन्तुष्ट हो। मुझ पर सन्तुष्ट होकर उन्होंने वर दिया कि मैं जिस देवता को चाहूँगी,

उसको बुला सकूँगी। इस वर ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया। मैंने इसे भूलना भी चाहा, पर भूल न सकी। यह बात मन में ही रही। एक दिन मैंने छत पर बैठे सूर्य को उदित होते देखा। मुझे वह वर याद हो आया। जब उस सूर्य की ओर मन गया, तो मैंने उसको बुलाया। आकाश में वह जिस शरीर में था, उसी में ही रहा, वह एक और शरीर में मेरे पास आया। उसने मुझे एक और वर माँगने के लिए कहा। मैं डर गई और मैंने उन्हें जाने के लिए कहा। क्योंकि अनावश्यक मैंने उन्हें बुलाया था, इसलिए उन्होंने मुझे, और मुझे वर देनेवाले दुर्वासा को शाप देने के धमकी दी और क्या करती मैंने वर माँगा कि वे मुझे अपने जैसा पुत्र दें। वे अपने तेज़ को मुझमें प्रविष्ट करके चले गये। यह बात मैंने पिता को पता न लगने दी। मैं अपने कमरे में ही रही। वहाँ कर्ण को जन्म दिया। फिर उसको चुपचाप नदी में छोड़ दिया। पाप कहिये या पुण्य कहिये, सच बात यह है, मैं कर्ण को देखना चाहती हूँ। आप कृपया मुझे उसे दिखाइये।"

"इसमें तेरा दोष क्या है? देवताओं के निर्णय को कौन रोक सकता है!" थोड़ी देर बाद वे फिर यों कहने लगे—"गान्धारी, तुम्हारे लड़के और भाई दिखाई देंगे। कुन्ती को कर्ण, सुभद्रा को अभिमन्यु, द्रौपदी को उसके पिता, भाई और बच्चे दिखाई देंगे। मैंने इन सब को पहिले ही दिखाने का निश्चय कर लिया था। जो जो मर गये हैं वे विधिवशात् मानव आकृति में पैदा हुए देवता थे। वे अपना कार्य समाप्त करके

देवलोक वापिस चले गये हैं। तुम सब भागीरथी के तट पर जाओ। वहाँ ये सब योद्धा दिखाई देंगे।

वहाँ सब उपस्थित लोग सोत्साह गंगा नदी के किनारे गये। वहाँ उन्होंने एक अच्छी जगह खोजकर विश्राम किया और इस प्रतीक्षा में रहे कि कब दिन समाप्त होता है और कब रात होती है, और कब वे मृत सम्बन्धियों को देखते हैं।

आखिर सूर्य अस्त हुआ। सब ने स्नान किया। फिर वे व्यास के पास गये। वे एकाग्र चित्त बैठे थे। उनके चारों ओर चुपचाप बैठ गये। तब व्यास ने युद्ध में मरे हुए लोगों को बुलाया। तुरत नदी के जल में तूफ़ान-सा आया। कौरव और पाण्डव सेना एक तरफ़ खड़ी थी। भीष्म और द्रोण बहुत-सी सेना लेकर पानी में से ऊपर आये। विराट, द्रुपद, उपपाण्डव, अभिमन्यु, कर्ण, दुर्योधन, शकुनि, दुश्शासन, आदि गान्धारी के लड़के, भगदत्त, भूरिश्रव, शल, शल्य, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, बाह्लिक, सोमदत्त आदि सब चमक-से रहे थे। उसी वेश में थे, जिसमें वे मरे थे। वे ही शस्त्र और ध्वजायें उनके पास थीं, जो मरते समय उनके पास थीं। उनमें वैर की भावना आदि कुछ न थी।

व्यास ने धृतराष्ट्र को दिव्य दृष्टि दी। गान्धारी, धृतराष्ट्र मरे हुए लोगों को फिर देख सके। इस अनुभव से सबको आश्चर्य हुआ। व्यास की तपश्शक्ति के कारण मृत योद्धा अपने सजीव माता-पिता, पत्नियों और भाइयों से मिल सके। उनसे स्नेहपूर्वक व्यवहार किया। बातें कीं। उनका आलिंगन किया। आनन्द दिया। किसी के मन में शोक नहीं रह गया था। उस दिन वह रात बड़े आनन्द में कटी।

[३०]

[गरुड़ के मुँहवाले सरदार के मनुष्यों को केशव और उसके साथी मिल गये। पर उस दिन रात को केशव के तम्बू में शिवाली और श्वानकर्णों के गिरोहों के दो जंगली आदमी आये। तम्बू के सामने जित और शक्तिवर्मा थे। उन्होंने उनको पहिचाना। "रुको" वे चिल्लाये और उनकी ओर बढ़े। बाद में—]

शक्तिवर्मा को तलवार लेकर सामने जाते देख, जितवर्मा ने भी तलवार निकालकर जंगलियों का रास्ता रोका। परन्तु दोनों जंगली लोगों ने अपने हाथों से उनको एक तरफ़ हटाते हुए कहा—"ज्यादह शोर न करो। गरुड़ के मुँहवाले सरदार ने इन तीनों को चुपचाप लाने के लिए कहा है। पास के तम्बू में ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक और मोट्टू हैं उनको यह नहीं मालूम होना चाहिए।"

यह सुन, जित और शक्तिवर्मा एक दूसरे का मुँह देखने लगे। शक्तिवर्मा ने तलवार म्यान में रखते हुए कहा—"यदि सरदार ने तीनों हत्यारों को अपने पास बुलाया है, तो मुझे कोई एतराज नहीं है। परन्तु तुम्हारा नाक-नक्शा देखकर ऐसा

लगता है कि तुम पंखवाले लोगों की जाति के नहीं हो। क्यों?"

शक्तिवर्मा के इस प्रकार कहते ही जंगली आदमियों में से एक ने हँसकर कहा—"हमने काम से ही जंगली आदमियों के मुँह लगा रखे हैं। छी, हटो रास्ते से।" वह यह कहकर आगे चला गया।

जितवर्मा चौंका, वह तलवार लेकर उनकी ओर दौड़ने ही वाला था कि केशव ने पीछे से उसके दोनों पैर खींचे और वह धड़ाम से आगे गिरा। तुरत जंगली गोमान्ना ने शक्तिवर्मा को पकड़कर आगे धकेल दिया।

जयमल ने एक रस्सी लेकर उन दोनों के पास आकर कहा—"चीं, चाँ की तो तुम दोनों की जान निकाल दूँगा। ऐसे पड़े रहो, जैसे मर गये हो।" कहकर उसने रस्सी से दोनों के हाथ पैर बाँध दिये। इतने में बगल के तम्बू में से ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक की आवाज़ सुनाई दी।

"ब्रह्मदण्डी को, लगता है, यहाँ जो कुछ हुआ है, मालूम हो गया है। अब हमारा यहाँ से भाग जाना अच्छा है।" जयमल ने तम्बू में जितने हथियार उसे दिखाई दिये, उतने ले लिये। इस बीच, ब्रह्मदण्डी और स्थूलकाय ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे। "ये तीनों दुष्ट जित और शक्तिवर्मा को मारकर भागने की सोच रहे हैं। गरुड़ों के सरदार उठो, तम्बू को घेर लो।"

यह सुनते ही जयमल ने तम्बू के द्वार पर आकर रुककर जंगलियों से कहा—"जब तुम दोनों अन्दर आये थे, तभी मैं जान गया था कि तुम कौन हो। हमने पहिले तुम्हें बिड़ाली और श्वानकर्णी के साथ देखा था। अब बताओ कि क्या किया

जाये! क्या तुम्हारे गिरोहवाले बड़ी सेना लेकर हमला करने आ रहे हैं!"

"नहीं, ऐसी बात तो कोई नहीं, हमें उन्होंने सिर्फ यह जानने के लिए भेजा है कि आप लोगों की क्या हालत है।" एक जंगली आदमी ने कहा।

केशव तम्बू से बाहर निकला। ब्रह्मदण्डी की जगह की ओर एक बार देखा। जयमल से उसने कुछ कहना ही चाहा था कि स्थूलकाय चाबुक घुमाता उनकी ओर आने लगा। यह देखते ही जंगली गोमान्ग तलवार लेकर उस पर हमला करने वाला था कि वह ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा। "इन तीनों के साथ दो पंखवाले भी मिल गये हैं। गरुडों के सरदार के गिरोह में फूट पैदा हो गई है। स्वामी द्रोह....गरुडों के सरदार, स्वामी द्रोह।"

जयमल ने एक बार चारों ओर देखा। हर तम्बू के सामने पंखवाले मनुष्य झुन्डों में जमा हो रहे थे! कुछ "दगा, स्वामी.... दगा, स्वामी" इधर उधर भागते, जो कोई सामने आता उसके कान में कुछ कहते।

"केशव, गोमान्ग, हमें अब भाग जाने के लिए एक ही उपाय दिखाई देता है।

जयमल्ल ने अभी अपनी बात पूरी भी न की थी कि केशव गोमान्ग और दोनों जंगली चमकती मशालों को लेकर "स्वामी द्रोह....स्वामी द्रोह" चिल्लाते आस पास के तम्बुओं को आग लगाने लगे। तुरत वे धाँय धाँय जलने लगे।

ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक और स्थूलकाय को आग देखकर काठ-सा मार गया। ब्रह्मदण्डी ने जादू के डण्डे को ऊपर उठाकर कहा—"हे कालभैरव! क्या मुझे अग्नि में नहलाओगे? क्या भक्त की परीक्षा कर रहे हो?" कहता वह लपटों से बचता भागा जा रहा था। भागते भागते उसने स्थूलकाय से कहा—"वीरो! प्रताप दिखाने का समय यही है। दिखाओ। देखो, ये दुष्ट किस तरफ़ भागे जा रहे हैं। मैं उस चिड़िया के मुँह वाले को उठाता हूँ।" वह सरदार के डेरे के पास गया।

ब्रह्मदण्डी को हड़बड़ाता अपनी ओर भागता आता देख गरुड़ के मुँहवाला सरदार जोर से हँसा। "क्यों मान्त्रिक! क्यों यों सुधबुध खोये गिद्ध की तरह भागे आ रहे हो! क्या बात है?"

अब तक हमारे सब शत्रु जान गये होंगे कि हम तम्बुओं में से निकलकर भाग गये हैं। वे अब फ़ौरन हमें पकड़ने के लिए आयेंगे। हम कहाँ हैं, किधर भाग रहे हैं, उन्हें नहीं मालूम होना चाहिए, इसलिए हम उनको धोखा देने के लिए एक काम करेंगे। इन जलती मशालों को लेकर जितने तम्बुओं को हम आग लगा सकें उतनों को लगा देंगे। तब जो भगदौड़ मचेगी उसमें हम आसानी से भाग निकलेंगे।" जयमल्ल ने कहा।

"क्या बात है? प्रभो! क्या हम सब की अक्ल मारी गई है? वे दुष्ट हमारे तम्बुओं को आग लगाकर भागे जा रहे हैं, और आप यहाँ बैठे बैठे हँस रहे हैं। फिर आपके कुछ सेवक भी स्वामी द्रोह करके उन लोगों से जा मिले हैं।" व्रजदण्डी ने हँसते हुए कहा।

"उन स्वामी द्रोहियों को और उन तीनों को जाल में फँसाकर लाने के लिए मैं कभी का आदमी भेज चुका हूँ। तुम मत घबराओ। आराम से बैठो। तुम्हारे अंगरक्षक जित और शक्तिवर्मा कहाँ हैं? वह मोटू गुलामों का सरदार कहाँ गया? कहीं वे उन दुष्टों के साथ मिलकर भागने की तो नहीं सोच रहे हैं?" गरुड़ के मुँहवाले सरदार ने मान्त्रिक की ओर घूर घूरकर देखते हुए कहा।

व्रजदण्डी यह प्रश्न सुनकर चौंका। उसने चारों ओर देखते हुए कहा—"नहीं, ऐसा कुछ नहीं होगा। वे भी तुम्हारे अनुचरों के साथ उन दुष्टों को पकड़ने गये होंगे।"

इतने में चार पाँच पंखवाले मनुष्य वहाँ भागते हुए आये। उनको देखते ही

गरुड़ के मुँहवाले ने पूछा—"क्या वे तीनों मिल गये हैं? स्वामी द्रोह करनेवाले दुष्ट कितने हैं?"

उनमें से एक ने अपने सरदार को झुक झुककर सलाम करते हुए कहा—"सरदार, वे सब मिलाकर पाँच हैं। उन्होंने हमारे लोगों में से कुछ को मार दिया है। वे हमारे व्यूह में से निकलकर सीधे मगरोंवाली झील की ओर भागे जा रहे हैं।"

"तो, हमारा काम और भी हल्का हो गया। तुम इस तरह रास्ता रोको कि

वे झील का चक्कर लगाकर न भाग निकलें। यदि उन्होंने झील में उतरकर पार जाने की सोची तो मगर उनको खा जायेंगे। यदि किनारे पर रुके, तो वे हमारे जाल में फँसकर रहेंगे। यह हमारी चाल है, समझे! अब जाओ।" गरुड़ के मुँहवाले ने कहा।

"पर....प्रभो! यह देखिये कि कहीं केशव को मगर निगल न जायें। उसे न मरने दीजिये। भयंकर घाटी की धन राशि का वह ही उत्तराधिकारी है।" ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक रह रहकर कहने लगा।

वह सरदार इस तरह उठा जैसे उसने ब्रह्मदण्डी की कोई बात सुनी ही न हो। उसने अपने अनुचरों से कहा—"चलो, देखें, उन्हें मगर खा गये हैं या वे हमारे लोगों के हाथ फँस गये हैं।" फिर वह झील की ओर निकल पड़ा। ब्रह्मदण्डी उनके पीछे पीछे चलने लगा।

जब वे मगरोंवाली झील के पास पहुँचे तो वह सारी जगह भागनेवालों के चिल्लाने से गूँज रही थी। उसने अपने अनुचरों में दो तीन को पास बुलाकर कहा—"क्या हुआ? क्या वे हमारे जालों में से निकलकर भाग गये हैं?"

"नहीं सरदार, उनको जाल में फँसाने के लिए हमने चारों तरफ़ जाल बिछा दिये हैं। वे और कहीं तो जा नहीं सकते थे, इसलिए झील के पास के पेड़ों के झुरमुट में घुस गये हैं। अब हमें उन्हें खोजना होगा और खरगोशों की तरह उनको पकड़कर बाहर निकालना होगा।" उनमें से एक ने कहा।

"शाबाश! अच्छा किया। इस काम को करके दिखाओ।" कहता सरदार एक ठूँठ पर उछलकर खड़ा हो गया।

उसके अनुचर मशाल लेकर सब जगह खोजते निकले।

यह सब देखते हुए भ्रमदण्डी ने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि केशव मगरोंवाली झील में कूदकर आत्म हत्या करने का प्रयत्न न करे। तुरत उसने ज़ोर से कहा—"बेटा केशव, तुम्हें प्राणों का भय नहीं है। तुम अपने साथ के द्रोहियों को छोड़कर हमारी ओर चले आओ। दयालु गरुड़ महाराजा तुम्हें अवश्य माफ़ कर देंगे।"

भ्रमदण्डी की आवाज़ की जवाब में चारों ओर से आवाज़ आने लगी—"श्रीडाली की जय! श्वानकर्णी की जय! साथ ही लम्बे लम्बे भाले पंखवाले मनुष्यों के ऊपर पड़ने लगे।

सरदार ने ठूंठ पर से कूदते हुए कहा—"इन जंगलियों ने हमारे व्यूह के चारों ओर एक और व्यूह बना दिया है। कोई फ़ायदा नहीं है। भागो, गरुड़ पक्षियों की तरह उड़ो।" पीछे मुड़कर वे भागने लगे।

भ्रमदण्डी भी उनके पीछे भागने लगा। "जित, शक्ति कहाँ हो!" वह चिल्लाने लगा।

बीड़ाली और श्वानकर्णी ने जब देखा कि झोंपड़ियों को आग लगा दी गई है, तो उन्होंने इसे अच्छा मौका जान पंखवाले मनुष्यों पर हमला कर दिया। जब उनके भाले लगने पर पंखवाले मनुष्य भागने लगे तो उनका हौसला और भी बढ़ा। परन्तु वे यह न जान सके कि केशव और उसके साथी कहाँ थे। इसलिए श्वानकर्णी और बीड़ाली को यह भी सन्देह हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि उनके फेंके हुए भाले उनको लगे। तुरत उन्होंने अपने साथियों को भाले न फेंकने की आज्ञा दी। फिर वे जोर से चिल्लाये—"केशव! जयमल्ल! कहाँ हो!"

बीड़ाली और श्वानकर्णी का चिल्लाना मगरों के झील के किनारे के पौधों में छुपे हुए केशव, उसके साथी और उन जंगलियों को सुनाई दिया। परन्तु वे जवाब देने ही वाले थे कि पंखवाले मनुष्य भागते-भागते उस तरफ़ आये। यह सोच कि वे उनका रास्ता रोकेंगे, वे उनसे लड़ने लगे।

केशव आदि को अपनी तलवारों का उपयोग करने का मौका नहीं मिला। एक तरफ़ मगरों से भरी झील थी और दूसरी ओर पौधे थे। उस परिस्थिति में वे किसी की भी परवाह न करके पंखवाले मनुष्यों से हाथापाई करने लगे।

इस लड़ाई में जो घायल हुए या जिनके पैर फिसले, वे झील में जा गिरे। केशव गोमान्ग आदि भी दो बार गिरे, पर फिर वे किनारे पर आकर पंखवाले मनुष्यों को उसमें धकेलने लगे। दूर बीड़ाली और श्वानकर्णी का चिल्लाना उन्हें सुनाई पड़ रहा था। (अभी है)

चन्दामामा का मन्दहास

[३]

समन्दल के भटों से छूटकर जब सालिहा बाहर आया, तो उसने एक ऐसा दृश्य देखा कि वह चकित खड़ा हो गया। समन्दल के राजमहल के बाहर, हज़ार योद्धा समुद्री घोड़ों पर सवार होकर, आपाद मस्तक कवच धारण कर, हथियारों से लेस खड़े थे। वे सब उसकी तरफ़ के ही लोग थे। यह डरकर कि कहीं उसके लड़के पर कोई आपत्ति न आ पड़े, सालिहा की माँ ने उसके पीछे-पीछे ही यह सेना भेजी थी।

सालिहा ने उनको अपनी परिस्थिति बताई और उनको आज्ञा दी—"अन्दर जाकर, उस नीच को खतम कर दो।" तुरत योद्धा घोड़ों पर से उतरे और तलवार लेकर, सालिहा के पीछे राजमहल में गये।

इतनी बड़ी सेना आ रही थी, पर समन्दल राजा बिल्कुल न डरा, उसने अपने रक्षक सैनिकों को आज्ञा दी—"इस बेवक़ूफ़ को और इसके गिरोह को मारो काटो...."

"समन्दल की जय" "सालिहा की जय" इस निनाद से आकाश गूँजने लगा। भयंकर युद्ध हुआ। सालिहा के सैनिक बड़े बहादुर थे। उनके सामने कोई भी सेना नहीं टिक सकती थी। उसके भाले और तलवारों ने समन्दल की सेना की चटनी बना दी। समन्दल के सिंहासन के चारों ओर लाशों के ढेर थे।

पेड़ थे। आत्मरक्षा के लिए जहाँनारा एक पेड़ के ऊपर चढ़कर बैठ गई। उसकी सहेली भी एक और पेड़ के ऊपर चढ़ गई।

जैसा अनुभव जहाँनारा को हुआ था, कुछ ऐसा ही अनुभव बद्रबसीम को भी अपने मामा के घर हुआ। जब दोनों तरफ़ के योद्धा लड़ रहे थे, सालिहा के साथ जो गुलाम उपहार लेकर गये थे, वे वापिस आये और उन्होंने सालिहा की माँ से जो कुछ गुज़रा था, कह सुनाया।

यह सोचकर कि इस हत्याकाण्ड का वह ही कारण था, बद्रबसीम बड़ा दुःखी हुआ। वह अपनी नानी के सामने भी जाते हिचका। उसे डर लगा कि यदि सालिहा की मौत हुई, तो वह उसको जिम्मेवार ठहरायेगी। इसलिए जब वह गुलामों से बात कर रही थी, तो वह उस समय ऊपर चला आया। वह ऊपर आकर, अपनी माँ से मिलना चाहता था। परन्तु समुद्र में उसे ठीक रास्ता नहीं मिला और वह भी एक निर्जन द्वीप में पहुँचा।

चूँकि वह बहुत दूर से आया था, इसलिए एक द्वीप में पहुँचते ही एक

समन्दल गुस्से में सालिहा पर लपका। सालिहा ने उसको अपने भाले से रोका। "पशु कहीं का, तेरे दिन पास आ गये हैं।" उसने यह कहकर ज़ोर से चोट की। समन्दल नीचे गिर गया। सालिहा ने उसको पकड़ रखा था और उसके सैनिकों ने उसके हाथ पैर बाँध दिये।

ज्योंहि राजमहल में शोर शराबा होने लगा, त्योंहि राजकुमारी जहाँनारा अपनी एक सहेली के साथ दूर समुद्र के तट में चली गई। फिर एक निर्जन द्वीप में जाकर, वह ऊपर चली आयी। वहाँ घने पत्तोंवाले

पेड़ के नीचे लेट गया। वह न जानता था कि उस पेड़ की टहनी पर वह लड़की थी, जिसके लिए वह इतनी दूर आया था और इतना सब कुछ हो गया था। ऐसी परिस्थितियाँ, जिस आसानी से विधि तैयार करती है, मनुष्य नहीं कर पाता। जब उसने सिर के नीचे हाथ रखकर, ऊपर देखा तो उसे ऐसा लगा, जैसे पेड़ पर चन्द्रमा हो। पर जब उसे यह मालूम हुआ कि वह चन्द्रमा नहीं एक लड़की का मुँह था, तो वह बड़ा खुश हुआ, चूँकि उस लड़की में उसने वे सब लक्षण देखे, जिनका उसके मामा ने बर्णन किया था। उसे ऐसा लगा कि वह भी युद्ध के कारण भयभीत होकर वहाँ भागी-भागी आयी थी।

फिर भी असलियत जानने के लिए वह उठ खड़ा हुआ और ऊपर की ओर मुँह करके उसने पूछा—"तुम कौन हो! इस द्वीप में, इस पेड़ पर तुम क्या कर रही हो!"

"मैं समन्दल की राजकुमारी हूँ। मेरा नाम जहाँनारा है। कहीं शत्रुओं के हाथ न पड़ जाऊँ, यह सोचकर मैं अपने पिता

और देश को छोड़कर भागी आ रही हूँ। अब तक दुष्ट सालिहा ने मेरे पिता को बन्दी बना लिया होगा और उसके सैनिकों को मरवा दिया होगा और मेरे लिए ढूँढ रहा होगा। अरे अरे....कितना कष्ट है। कैसी दुस्थिति है।" यह कहती कहती जहाँनारा रोने लगी और उसके आँसू बद्रबसीम पर गिरे।

बद्रबसीम बड़ा खुश हुआ कि उसका स्वप्न साकार हो गया था। उसने उससे कहा—"प्रेयसी! मेरी स्वप्न सुन्दरी! नीचे उतर आओ। मैं बद्रबसीम राजा हूँ।

गुल्नार का लड़का हूँ। मैं तेरे सौन्दर्य के कारण जला जा रहा हूँ। नीचे उतर जाओ।"

उसने टहनी पर कुछ और पास झुक कर कहा—"आह! अल्लाह की मेहरबानी, तो तुम ही हो बद्रबसीम, सालिहा का भान्जा और गुल्नार का लड़का! यदि तुमको मेरे पिता ने नहीं स्वीकार किया है, तो वे कितनी गलती कर रहे थे। मैं कैसे यह सोचूँ कि मुझे तुम से अच्छा पति मिल सकेगा! मैं तुम से कितना प्रेम कर रही हूँ। कैसे बताऊँ! मेरे पिता के व्यवहार पर क्रुद्ध न होओ। जब से तुम्हें देखा है, तब से मेरा मन प्रेम के कारण कल्लोल्ति है।" कहकर वह टहनी से नीचे खिसक गई।

बद्रबसीम ने उसका आलिंगन करना चाहा। परन्तु जहाँनारा ने उसे हाथ से धकेल कर कहा, "भूजीवी, तुम अपना मानवाकार छोड़ दो। लाल नाक और लाल पैरोंवाले सफेद पक्षी बन जाओ।" बद्रबसीम इस अचरज में था कि यह सब क्या हो रहा था कि वह पक्षी बन गया। उसके पैर और नाक लाल हो गये। पंख भी थे।

पर वह उनसे उड़ न सकता था। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

जहाँनारा ने उसके दुःख की परवाह न की। उसने अपनी सहेली को बुलाकर कहा—"मेरे पिता के बद्ध शत्रु सालिहा का वह भान्जा है। इसको ले जाकर रेगिस्तान द्वीप में छोड़ दो। भूख और प्यास से मर जायेगा।"

जहाँनारा, उसको पक्षी बनाने के लिए प्रेम का अभिनय करके उसके पास गई थी। अपने पिता का बदला लेने के लिए ही उसने उसको पक्षी बनाया था।

परन्तु उसकी सहेली को सन्देह हुआ कि बाद में वह शायद इस काम के लिए पछताये—चूँकि कोई नहीं जान सकता था कि कितनी देर तक राजकुमारी का यों गुस्सा रहेगा। इसलिए सहेली ने उसको रेगिस्तान में न छोड़कर कहीं और छोड़ने का निश्चय किया। राजकुमारी बाद में उस पर नाराज़ हो सकती थी। मेरे कहने मात्र से ही क्या इतना भयंकर काम करना था, आगे पीछे सोचने की क्या जरूरत नहीं थी! इसलिए वह उस पक्षी को हरे भरे द्वीप में

छोड़ आयी जहाँ फलों के बाग थे। जल प्रपात वगैरह थे।

उधर सालिहा ने समन्दल को एक कमरे में कैद कर लिया और उसकी जगह उसने अपने को राजा घोषित किया। राजकुमारी जहाँनारा के लिए उसने सब जगह खोज की, पर कहीं उसका पता न लगा। यह सोचकर कि वह कहीं न थी, वह अपनी माता को देखने गया और उससे जो कुछ हुआ था, कह सुनाया। उसने जब पूछा कि भान्जा कहाँ था, तो उसने कहा कि लड़कियों के साथ कहीं घूमने गया होगा। कुछ देर बाद लड़कियाँ तो वापिस चली आयीं, पर उनके साथ बद्रबसीम न था। उनको न मालूम था कि वह क्या हो गया था।

लोगों को उसे ढूँढ़ने भेजा गया, पर कहीं उसका पता न लगा। सब इस कारण दुखी थे। सालिहा ने गुल्नार को खबर भिजवाई कि उसका लड़का कहीं न दिखाई दे रहा था।

यह सुनते ही गुल्नार पानी में कूदी और अपने मायके चली गई। वह कुछ भी नहीं जानती थी, इसलिए उसकी माँ ने आहें भरते भरते, रह रहकर सारी बातें सुना दीं। "तुम्हारे भाई ने समन्दल के राज्य को जीतकर उसको हर जगह ढुँढ़वाया, परन्तु कहीं उसका पता न लगा। जहाँनारा का भी कहीं पता न था।"

यह सुनते ही गुल्नार के आँखों के सामने अन्धेरा छा गया। उसे ऐसा लगा जैसे हृदय की धड़कन ही कम हो गई हो। कई दिन, अपनी माँ के साथ रोती रही। आखिर उसकी माँ ने कड़ा दिल करके कहा—"क्यों बेटी, क्यों रो रही हो! लड़के का पता कहीं-न कहीं लगेगा

ही। बिना मालूम किये, तुम्हारा भाई आराम नहीं लेगा। इस बीच तुम अपने लड़के के लिए यही कर सकती हो कि तुम वापिस चली जाओ और देखो कि उसके राज्य का भंग न हो। यह किसी को न मालूम हो कि वह कहीं दिखाई नहीं दे रहा है। फिर ऊपर अल्लाह हैं ही।"

"हाँ, माँ मैं वापिस चली जाती हूँ। परन्तु तुम उसको खोजते रहो। यदि उसकी कोई हानि हुई, तो मैं मर जाऊँगी। उसके सिवाय मेरा कोई जीवन नहीं है।" गुलनार ने अपनी माँ से कहा।

"हम कुछ नहीं अछूता छोड़ेंगे। पर तुम धीरज रखो। ऊपर से इस तरह रहना जैसे कुछ हुआ ही न हो।" माँ ने कहा। गुल्नार अपने बन्धुओं से विदा लेकर घर वापिस चली आयी।

इस बीच जहाँनारा की सहेली ने बद्रबसीम को एक हरे भरे द्वीप में छोड़ दिया। जब वह जा रही थी, तो वह अपने दुःख को न रोक सका। उसे तब भी आश्चर्य हो रहा था कि वह कैसे पक्षी हो गया था। उसने उड़ने का प्रयत्न किया। परन्तु उसके भारी शरीर को हवा में उड़ाने की शक्ति उसके पंखों में न थी। "उड़ने से भी क्या फ़ायदा! इस रूप में मुझे कोई भला कैसे पहिचान सकेगा!" उसने निरुत्साहित हो सोचा।

उसने वहाँ फलों से पेट भर लिया और साफ़ पानी पीलिया। रात के समय एक टहनी पर चढ़कर वहाँ आराम से सो गया। एक बार जब वह सिर नीचा करके उस द्वीप में जा रहा था, तो पक्षी पकड़नेवाले एक आदमी ने उसे देखा। उस विचित्र पक्षी को देखकर उसको अचरज हुआ। सफ़ेद शरीर के कारण लाल चोंच

और लाल पैर और भी लाल दिखाई दे रहे थे। वैसे पक्षी को उसने कहीं भी न देखा था। वह बड़ी चालाकी से पीछे से आया और फन्दा डालकर उसने उस पक्षी को पकड़ लिया और उसे अपने नगर ले गया।

"इतने सालों से मैं पक्षी पकड़ रहा हूँ, पर इस तरह का पक्षी मैंने कभी नहीं देखा है। यह कोई विलक्षण पक्षी है। इसे बाज़ार में यदि बेचा गया तो मामूली लोग खरीदेंगे और इसे खा जायेंगे। यदि मैंने इसे ले जाकर राजा को उपहार में दिया तो वे मुझे बहुत-सा ईनाम देंगे।" उसने यह सोचकर सुल्तान को यह पक्षी उपहार में दे दिया। राजा ने उसको दस दीनारें दीं और वह अपने रास्ते चला गया।

सुल्तान ने उस पक्षी को सोने के सीखचोंवाले पिंजड़े में रखा और उसे वह स्वयं दाने डालता। परन्तु उस पक्षी ने उनको छुआ तक नहीं। सुल्तान को आश्चर्य हुआ। उसने उसको पिंजड़े से बाहर निकाला और उसके सामने तरह तरह के माँस के टुकड़े और फल आदि रखे। तुरत वह पक्षी उनको खाने लगा।

सुल्तान बड़ा खुश हुआ। उसने अपने गुलाम को बुलाकर कहा—"अपनी मालकिन से जाकर कहो कि यहाँ एक विचित्र पक्षी है, जो पक्षियों का खाना बिल्कुल नहीं खाता है। उन्हें इसे देखने आने के लिए कहो।"

यह जानकर सुल्तान की पत्नी आयी। परन्तु वह पक्षी को देखते ही चेहरे पर परदा डालकर पीछे हटकर जल्दी जल्दी पीछे जाने लगी। उसके जाने से पहिले सुल्तान भागा भागा गया। उसके परदे को हटाकर कहा—"यहाँ, सिवाय मेरे, हिजड़े और दासियों के कोई नहीं है। क्यों यों परदा कर रखा है!"

"यह पक्षी सचमुच पक्षी नहीं है। आपकी तरह आदमी है। शारिमान और गुलनार का लड़का बद्रबसीम है। चूंकि इसके मामा सालिहा ने उसके पिता को हरा दिया था इसलिए समन्दल की लड़की जहाँनारा ने इसको पक्षी बना दिया है।" सुल्तान की पत्नी ने कहा।

"हो भला इस जहाँनारा का। मुझे इसकी पूरी कहानी तो सुनाओ।" सुल्तान ने कहा।

उस समय के बड़ा मन्त्रवेत्ताओं में सुल्तान की पत्नी अग्र मुखी थी। उसने सुल्तान को बद्रबसीम की सारी कहानी सुनाई। सब सुनने के बाद सुल्तान ने पक्षी से पूछा—"क्या यह सच है?" पक्षी ने पंख फड़फड़ाते सिर ऊपर नीचे किया।

"अगर यही बात है, तो यह बड़ी मुसीबतें झेल रहा होगा। तुरत इसको मुक्त कर दो जादू के असर से।" सुल्तान ने अपनी पत्नी से कहा।

तुरत सुल्तान की पत्नी ने दीवार में लगी अलमारी को खोला। बद्रबसीम को उसमें आने के लिए कहा। फौरन पक्षी अलमारी में चला गया। उसके बाद वह भी एक छोटे पात्र में पानी लेकर अन्दर गयी और उसने कुछ मन्त्र पढ़े। मन्त्रों के प्रभाव से पात्र का पानी उबलने लगा। उसने उस पानी को उस पर छिड़का—"तुम अपना यह रूप छोड़कर स्वाभाविक रूप में आ जाओ।" यकायक पक्षी का सारा का सारा शरीर कांप उठा और तुरत बद्रबसीम अपने स्वाभाविक रूप में आ गया। सुल्तान उसके सौन्दर्य को देखकर चकित रह गया। "वाह, तेरे सौन्दर्य के अनुरूप ही तेरा नाम रखा गया है।"

बद्रबसीम सुल्तान के पास आया। उसके हाथ को चूमकर उसने कहा—"आप युग युग जीयें।" सुल्तान ने उसको सिर फिर चूमकर कहा—"बेटा, तुम अपनी जीवन कहानी सुनाओ।" बद्रबसीम ने अपने जीवन की सारी घटनायें एक एक करके सुना दीं।

उसकी कहानी सुनने के बाद, सुल्तान ने उससे कहा—"बेटा, मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ?"

इस पर बद्रबसीम ने कहा—"मुझे घर छोड़े बहुत समय हो गया है, मुझे अपने राज्य को वापिस जाना होगा। मुझे नहीं मालूम कि मेरी अनुपस्थिति में, मेरे राज्य को हड़पने के लिए मेरे शत्रु क्या-क्या साजिशें कर रहे हैं। मेरी माँ भी मेरे लिए बहुत दुखी होगी, इसलिए जल्द से जल्द मैं उनसे मिलना चाहता हूँ।"

सुल्तान ने तुरत उसके लिए एक जहाज सिद्ध करवाया। उसमें सब तरह की चीज़ें रखवाईं। बद्रबसीम को उस पर सवार करके भिजवा दिया। बद्रबसीम अपने देश पहुँचा। अपने महल में गया। जब उसने अपने कमरे में पैर रखा, तो वहाँ उसकी माँ और मामा भी थे। उनके साथ समुद्र लोक के बन्धु बान्धव भी आये हुए थे।

बद्रबसीम भागा भागा अपनी माँ के पास गया और उसका आलिंगन कर लिया। गुल्नार इतनी खुश हुई कि वह खुशी में आँसू बहाने लगी। दोनों काफ़ी देर तक अपने अपने अनुभव सुनाते रहे। फिर बद्रबसीम ने कहा—"मेरा, जहाँनारा से विवाह करने का
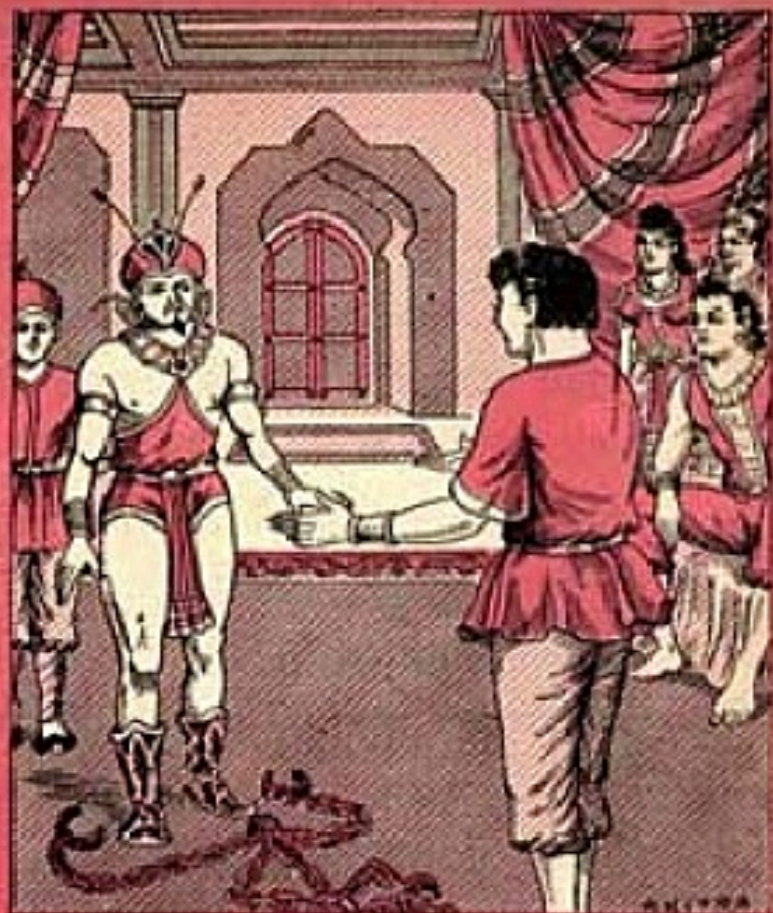
निश्चय बिल्कुल नहीं बदला है। वह सचमुच अतुल्नीय है।"

"अब यह कोई कठिन बात नहीं है। समन्दल राजा हमारा कैदी है।" उसकी नानी ने कहा और उसने अपने आदमियों को भेयकर समन्दल राजा को जंजीरों में बन्धवाकर बुलवाया।

बद्रबसीम ने उसकी जंजीरें खुलवा दीं और उससे बड़े विनय से कहा—"जो कुछ कष्ट आपको मेरे कारण हुए हैं, उनके लिए मुझे माफ़ कर दें। अब बिना किसी और के कहे, मैं स्वयं ही आपसे

कह रहा हूँ कि आप हम से सम्बन्ध कर लें। आप अपनी लड़की का मेरे साथ विवाह कीजिये। यदि आप इसके लिए नहीं मानेंगे, तो मैं जीवित न रहूँगा। यदि मान गये, तो मैं आजीवन आपका कृतज्ञ ही नहीं रहूँगा, बल्कि आपका राज्य भी आपको वापिस दे दूँगा।"

समन्दल राजा ने उसका आलिंगन किया—"बद्रबसीम, तुमसे अच्छा पति उसको नहीं मिलेगा। यदि मैं कहूँगा, तो वह तुमसे अवश्य विवाह करेगी। परन्तु अब वह समुद्र में एक द्वीप में छुपी हुई है। उसे बुलाना होगा।" उसने समुद्र लोक में से एक दूत को बुलवाया और उसको आज्ञा दी कि वह उसकी लड़की तुरत खोजकर लाये। थोड़ी ही देर में, वह जहाँनारा और उसकी सहेली को साथ ले आया। समन्दल राजा ने अपनी लड़की का सब से परिचय कराया। बद्रबसीम को दिखाते हुए उसने जहाँनारा से कहा—"बेटी, मैंने तुम्हारा इस लड़के के साथ विवाह करने का वचन दिया है। इससे अधिक सुन्दर, और बड़ा सम्राट, और अच्छा आदमी इस संसार में कहीं नहीं है। तुम दोनों की जोड़ी अच्छी रहेगी, यह मेरा विश्वास है।"

जहाँनारा ने सिर हिलाकर कहा—"आपकी बात ही मेरेलिये आदेश है। चूँकि आपने कहा है, इसलिए मैं इसको अपने हृदय में स्थान दूँगा।" यह सुन सब खुश हुए। तुरत काज़ी और गवाहों को बुलाया गया और शादी के परचे लिखवा लिए गये। बड़ी धूम धाम से शादी हुई। सब ही बड़े खुश हुए। [समाप्त]

बुद्धि-हीन

एक धनी भूस्वामी था। उसका बड़ा-सा घर था। ढेर-सा सोना और चान्दी थी। जहाँ तक नज़र जाती, वहाँ तक उसके खेत थे। पर उसकी एक ही कमी थी....उसकी पत्नी मर गई थी।

एक दिन पास के किसान की लड़की भूस्वामी के घर काम करने आयी। वह लड़की भूस्वामी को पसन्द आयी। गरीब घर की लड़की थी। माँगने-भर की देर थी कि वह झट शादी करने के लिए मान जायेगी, यह सोच उसने उस लड़की से कहा कि वह फिर शादी करना चाहता था।

"अच्छा", उस लड़की ने ऊपर से कह तो दिया, पर मन ही मन सोचा— "इस बूढ़े खूसट को भी क्या शादी चाहिए!"

"हाँ, मैं तुम से ही शादी कर लेना चाहता हूँ।" भूस्वामी ने कहा।

"मुझसे! भला मुझसे क्यों!" उस लड़की ने कहा।

भूस्वामी को गुस्सा आ गया कि वह उसकी बात का विरोध कर रही थी। पर जब उसने ज़ोर देकर बार-बार पूछा, तो उस लड़की ने उतने ही ज़ोर से बार-बार उसको मना किया। यह सोच कि लड़की से बात करने का कोई फ़ायदा न था, भूस्वामी ने लड़की के पिता को बुलवाया। "यदि तुमने अपने लड़की को मुझसे शादी करने के लिए मना लिया, तो जो कुछ तुम्हारा कर्ज़ है, वह माफ़ कर दूँगा और ज़मीन, जो तुम्हारे खेत से मिलती है, वह भी तुम्हें दे दूँगा।"

रामकृष्ण

किसान को न सूझा कि क्या कहे। "हमारी तरफ़ से कोई देरी नहीं है। आप विवाह की व्यवस्था कीजिये।"

"क्या लड़की मान गई है!" भूस्वामी ने पूछा।

"उसके मानने की क्या ज़रूरत है! मुहूर्त निश्चित करके मुझे खबर भेजिये। मैं उससे यह कहकर भेज दूँगा कि आपके घर में काम है, उसके आते ही आप उसके गले में शादी की तीन गाँठे बाँध देना।" किसान ने कहा।

यह चाल भूस्वामी को बहुत पसन्द आयी। उसने विवाह की व्यवस्था करवाई। जिनको बुलाना था, उनको बुलवाया। पुरोहित आदि भी सब तैय्यार थे। तब भूस्वामी ने नौकरों में से एक को बुलाकर कहा—"अरे, पासवाले किसान के घर जाओ, उसने कुछ भेजने के लिए कहा था, उसे साथ लेकर चले आना।"

नौकर किसान के घर गया—"नमस्ते, आपने हमारे मालिक के यहाँ कुछ भेजने के लिए कहा था। उन्होंने उसे तुरत लाने के लिए कहा है।"

"वह देखो, उस खेत में है।"

"हाँ, हाँ, छोटी लड़की है। उसे कुछ नहीं मालूम। उसे मना लूँगा।" किसान भूस्वामी को वचन देकर, घर चला आया। बहुत मनाने पर भी वह लड़की को शादी के लिए नहीं मना पाया। उस लड़की ने कहा—चाहे भूस्वामी ढेर-सा धन दे, तो भी वह उससे शादी न करेगी! दिन बीतते गये। किसान के जवाब का इन्तज़ार करते करते भूस्वामी ऊब गया। उसने किसान को बुलाकर कहा—"तुमने वचन दिया था कि तुम लड़की दोगे! कब तक इन्तज़ार करूँ!"

नौकर भागा भागा वहाँ गया। वहाँ घास काटती किसान की लड़की को देखकर कहा—"हमारे मालिक के घर, आपके पिता ने कुछ भेजने के लिए कहा था।"

उस लड़की ने सोचा—"ओहो, तो यह है चाल!" शायद तुम छोटी काली घोड़ी चाहते हो। वह मेंड़ के परली तरफ़ बंधी हुई है। ले जाओ।"

नौकर घूम फिरकर, मेंड़ के परली तरफ़ गया। घोड़ी को खोलकर, उस पर सवार होकर, सरपट उसे दौड़ाता, भूस्वामी के घर गया। उसको देखते ही भूस्वामी ने पूछा—"क्या ले आये हो?"

"ले आया हूँ, ड्योढ़ी के पास है!" नौकर ने कहा।

"तो उसे दुमंजले पर ले जाओ।" भूस्वामी ने कहा।

"ऊपर दुमंजले में? क्या मैं यह कर सकूँगा?" नौकर ने हके-बके होकर पूछा। हो सकता है कि दुल्हिन शरमा रही हो, एक दो का होना अच्छा था, यह सोचकर भूस्वामी ने कहा कि यदि तुम अकेले नहीं कर सकते हो, तो दो-तीन को साथ ले जाओ।
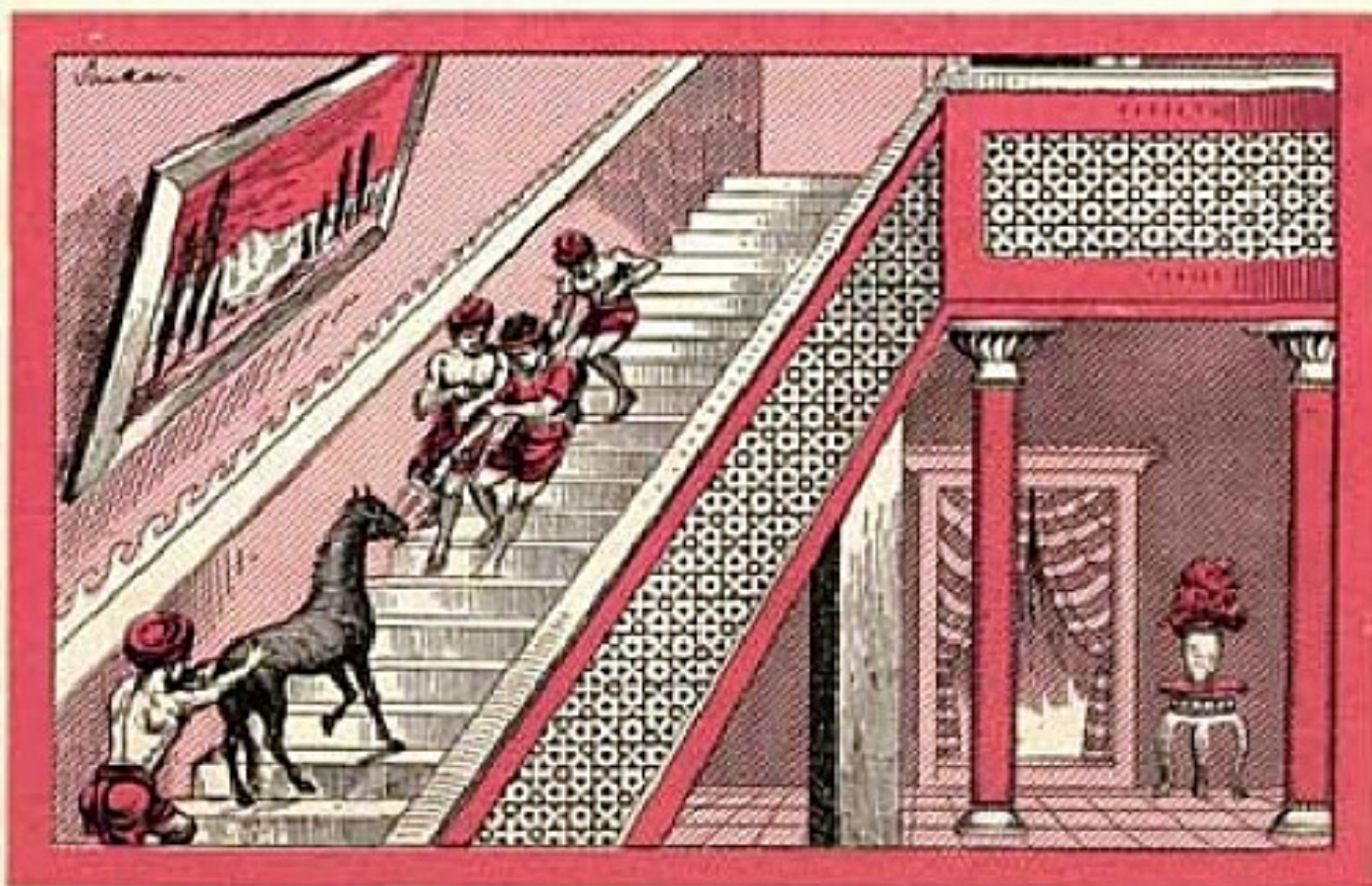
नौकर और और कुछ लोग घोड़ी को आगे से खींचते, पीछे से धकेलते जैसे तैसे सीढ़ियों पर से चढ़ाकर, ऊपर एक कमरे में ले गये।

"ऊपर पहुँचा दिया है, पर हुजूर, बड़ी दिक्कत हुई।" नौकर ने आकर कहा।

"तुम्हारी यह मेहनत बिना ईनाम के नहीं जायेगी। तुम स्त्रियों से जाकर कहो कि उसे सजायें, संवारें।" मालिक ने कहा।

"यह क्या मालिक!" नौकर ने चकित होकर कहा।

"अब तुम कुछ न कहो। उसे साड़ी वाड़ी पहिनाकर, गहने लगाने के लिए कहो, माला और सिन्दूर आदि भी तैय्यार रखने के लिए भूस्वामी ने कहा।

नौकर ने दासियों से कहा—"तुम सब जाकर, उस घोड़ी को, दुल्हिन बनाओ। यह मालिक का हुक्म है। इतना सजाओ कि जो देखने आयें, उनके हँसते हँसते पेट फूल जायें।"

दासियों ने सजा धजाकर घोड़ी को दुल्हिन बनाया। नौकर ने नीचे आकर, अपने मालिक से कहा—"बाबू, सब तैय्यार है।"

"अच्छा, तो उसे नीचे ले आओ।" भूस्वामी ने कहा।

सीढ़ियों पर "टक टक" ध्वनि हुई। जब घोड़ा उतर कर आया, तो सब अतिथि और अभ्यागत ठट्ठा मारकर हँसे। हँसी का तूफ़ान-सा आ गया।

भूस्वामी की दूसरी शादी शुरू होने से पहिले ही खतम हो गई थी, जो जो शादी देखने आये थे, वे अपने रास्ते चले गये। सच मानिये, फिर उसने शादी के बारे में कभी न सोचा।

P.G. REDDY
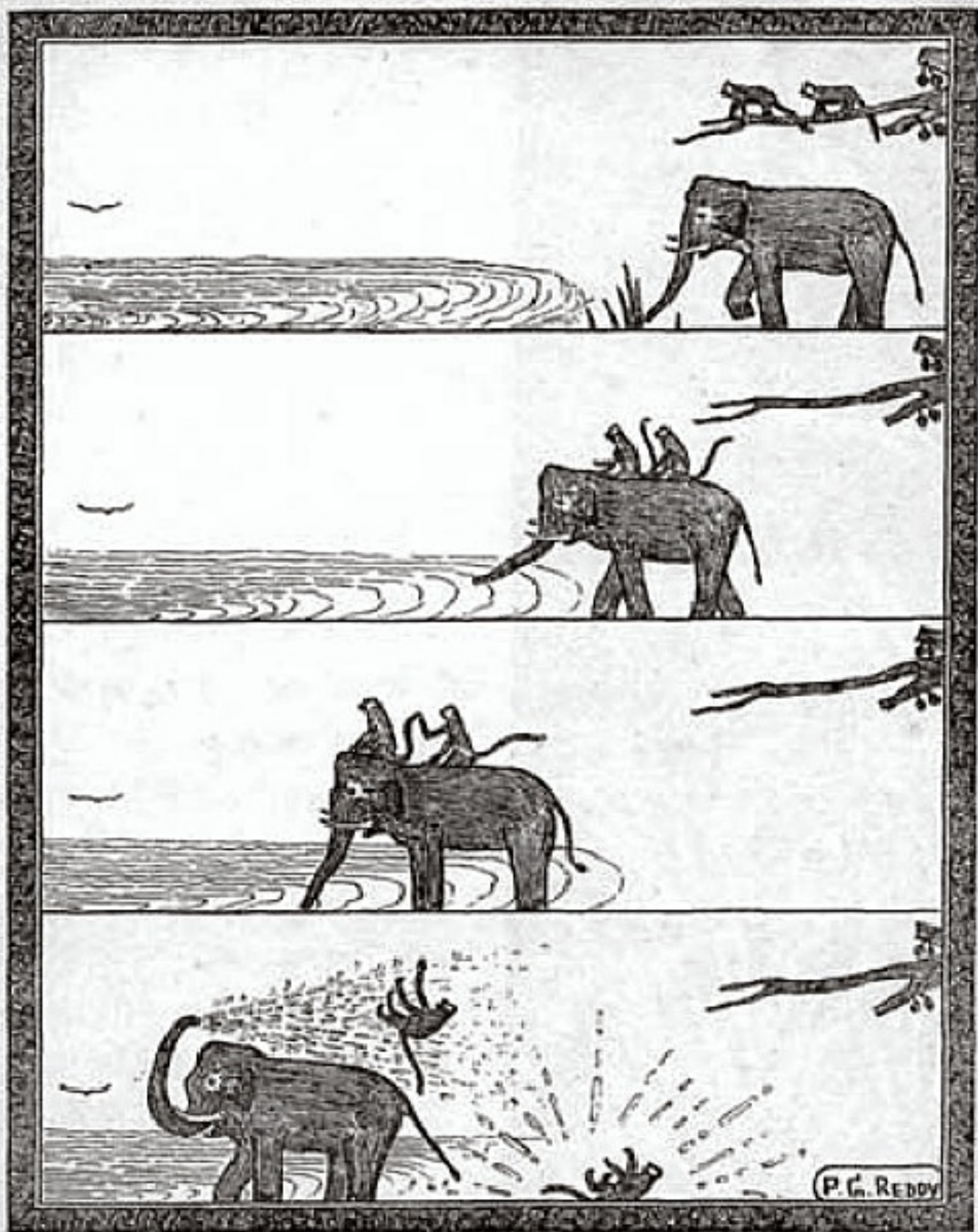
खोई हुई अमरता

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह फिर पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारकर, कन्धे पर डाल चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"तुम किस फल की आशा में, आधी रात के समय इतने कष्ट झेल रहे हो, मुझे नहीं मालूम, पर कई ऐसे भी है जो अमरता पाकर, उसे खो चुके हैं। यह दिखाने के लिए, मैं तुम्हें चारुकेशी की कहानी सुनाता हूँ। कहानी सुनो, तुम्हें थकान नहीं मालूम होगी।" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

जब गान्धार देश पर रेगिस्तान के लोगों ने हमला किया तो छोटे, मोटे राजा उसका मुकाबला नहीं कर सके। इन हमलों के कारण, देश करीब करीब नष्ट हो गया। तब गान्धेरेय नामक व्यक्ति ने

सारे देश में घूमघाम कर, लोगों में उत्साह संचरित किया, बहादुर युवकों को चुनकर उसने एक सेना बनाई। उनको युद्ध विधि सिखाई। यह सेना इतनी ताकतवर थी, कि शत्रु इनका नाम सुनते ही घबराते थे। गान्धेरेय के साथियों को गान्धेरेय कहा जाता था। इन गान्धेरेयों के कारण, गान्धार देश फिर शस्यश्यामल हो गया। देश में शत्रु का भय जाता रहा। राजाओं को रक्षा मिली।

गान्धेरेयों को राज्य बढ़ाने की आंकाक्षा न थी। युद्ध जब न हुए और शान्ति कायम हो गई, तो वे अपनी शक्ति को बिना गंवाये, शिकार आदि में विनियोग करते। एक साल, वसन्त ऋतु में वे कुश पर्वत पर शिकार खेलने गये। उनके साथ गान्धेरेय का लड़का चारुकेशी था। जब और शिकार में मस्त थे, तब वह एक पहाड़ पर बैठकर, नीचे की घाटी का दृश्य और दूर के पहाड़ों को देखता रहा।

वह यों देख रहा था कि नीचे की घाटी के सरोवर में से बादल की तरह कोई चीज़ ऊपर उठती हुई दिखाई दी। जब वह बादल पास आया, तो वह
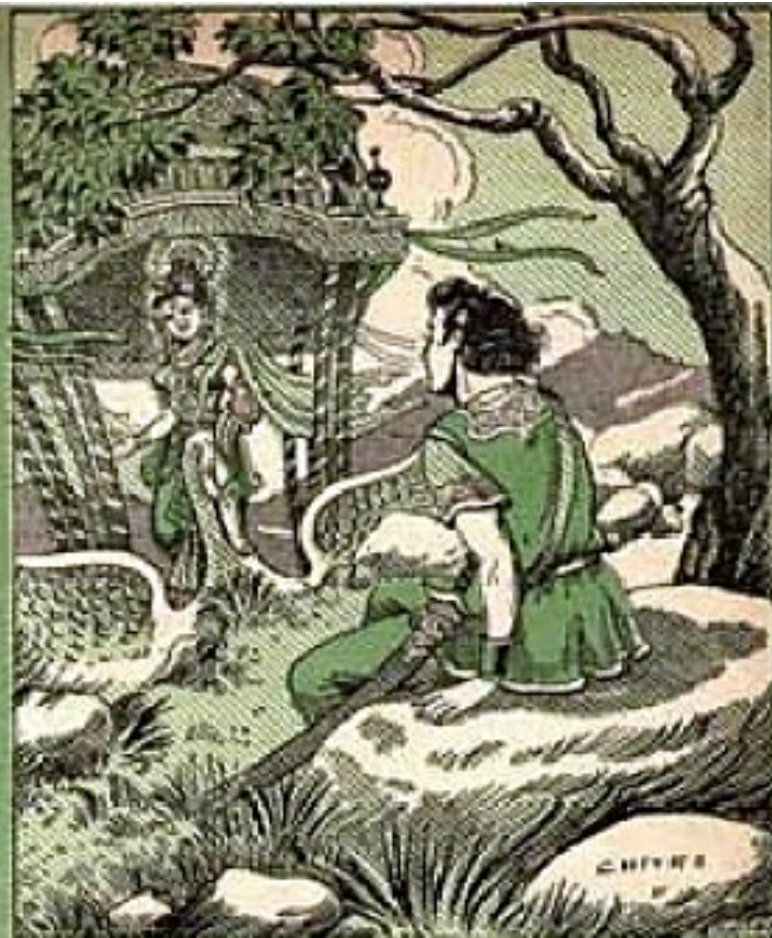
यकायक फटा और उसमें से एक विमान निकला और उस विमान में उसने एक देवकन्या देखी। उसे आश्चर्य हुआ।

विमान चारुकेशी के पास रुका। उसकी देवकन्या ने उस से कहा—"मैं विद्याधर सम्राट की लड़की हूँ। विद्याधरनी हूँ। मैं तुम्हें बहुत दिनों से चाहती हूँ। बड़ी मुश्किल से मैंने अपने पिता की अनुमति पायी है। अगर तुम्हें आपत्ति न हो, तो तुम्हें ले जाकर तुम से विवाह करने के लिए आई हूँ। यदि मुझसे विवाह किया, तो तुम्हें देवत्व प्राप्त होगा।

तुम्हे न बुढ़ापा आयेगा, न मौत ही। कोई शारीरिक रोग नहीं आयेंगे। जो भोगविलास तुम सपने में भी देखोगे, वे भी तुम्हें मिलेंगे।"

चारुकेशी को यह सब स्वप्न-सा लगा। उसे यह भी न मालूम था कि वह क्या कर रहा था, वह विमान में जाकर विद्याधरी के साथ बैठ गया। विमान हिला। गान्धेरेय जगह जगह खड़े होकर, चिल्ला रहे थे। परन्तु उनका चिल्लाना उसको नहीं सुनाई दिया। विमान, पहाड़ों और समुद्रों के ऊपर से होता हुआ विद्याधर लोक पहुँचा। चारुकेशी ने कभी उतने सुन्दर प्रदेश की कल्पना भी न की थी। वहाँ का हर घर, पौधा, पेड़ ऐसा लगता था जैसे उन्हें गढ़कर बनाया गया हो। वहाँ के लोगों में, उसने कहीं, कोई भौन्डा आदमी, या प्राणी नहीं देखा था। विद्याधर सम्राट ने चारुकेशी का स्वागत किया। उसी दिन, राजा ने अपनी लड़की का उससे विवाह कर दिया। उस विवाह में मन्त्र-तन्त्र तो नहीं पढ़े गये, परन्तु विनोद और सहभोज बहुत-से हुए। मनोरंजन हुआ।

उसके बाद वह वर्णनातीत भोगों में मस्त हो गया। उसे एक क्षण का भी अवकाश न था। उसका जीवन एक मधुर सपना था। उसे समय प्रवाह का भी ज्ञान न था। वह चिन्ता किसे कहते हैं, यह भी भूल गया था। उसका एक चीज़ का चाहना, उसका न मिलना यह कभी न हुआ था।

कुछ समय बाद चारुकेशी में अजीब परिवर्तन हुआ। वह सोते-सोते सपने देखने लगा। वे सपने विद्याधरों के संसार के न थे। परन्तु गान्धार लोक के बारे में थे। उसने गान्धारियों को, पक्षियों का पंख निकालते, जंगली सूअर का शिकार करते और पशुओं का शिकार करते, विश्वस्त मित्रों का साथ सपने में देखा। एक बार उसने जो कुछ सपने में देखा था, उसे दूर जानकर चिन्ता हुई। जब उसकी पत्नी ने पूछा कि वह क्यों ऐसा था, उसने कहा—"मैंने सपने में फलाने फलाने को देखा था। हम सब जंगल में हरिणों का शिकार कर रहे थे।"

कुछ समय बीता। चारुकेशी अपने देश के बारे में अधिक सपने ही देखने लगा, कम नहीं। "तुम नरलोक के बारे

में हमेशा सोचते रहते हो, आखिर वहाँ है ही क्या? कदम-कदम पर बाधायें, रोग, बुढ़ापा, मौत। कोई ऋतु भी आरामदेह नहीं होती। गरमियों में गरमी, उसके बाद वर्षायें, वर्षाओं के बाद सरदी। सरदी आते ही पेड़ सूख जाते हैं, गरमी आते ही तालाब सूख जाते हैं।" विद्याधरी ने अपने पति से कहा।

"यह न कहो। मालूम है गरमियों के बाद जब बारिश होती है, तो कितना मज़ा आता है। सरदियों में सूखे वृक्ष, जब वसन्त में हरे होते हैं और पक्षी चहचहाते हैं, तब यह सब कितना आनन्दायक होता है। भले ही मौत हो, पर हमेशा नया जीवन आता रहता है। मुझे एक दिन के लिए हमारे गान्धार देश जाने दो। मैं एक बार उसको देखना चाहता हूँ।" चारुकेशी ने अपनी पत्नी से कहा।

वह उसके नरलोक जाने की इच्छा बिल्कुल पसन्द न करती थी। फिर भी वह उसके जाने के लिए मान गई। "विमान में आइये और जो जो जगह देखना चाहें, देख आइये। परन्तु एक काम कीजिये, वहाँ भूमि पर पैर न रखिये। विमान में से नीचे न उतरिये।" विद्याधरी ने चारुकेशी से कहा।

वह बड़ा खुश हुआ। विमान में वह जल्दी ही स्वदेश गया। गान्धेरेय जहाँ जहाँ घूमा करते थे, शिकार करते, शिविर बनाते थे, वे सब जगहें उसने देखीं। पर कहीं उनका पता न लगा। न उनका शोर ही उसने सुना। उसने समझा कि उसके पिता और उसके साथी देश छोड़ कर कहीं चले गये होंगे।

एक जगह एक किसान काम कर रहा था। उसने उसको बुलाकर कहा—"इस

जगह गान्धेरेय लोग रहा करते थे, वे कहाँ चले गये हैं, जानते हो!"

"कहाँ गान्धेरेय, कहाँ ये देश, उनके गये तीन सौ वर्ष हो गये हैं।" किसान ने कहा।

चारुकेशी को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। जब वह विमान को ले जा रहा था, तो उसने एक और दृश्य देखा। चार आदमी एक पहाड़ में खान खोद रहे थे। वे चारों मिल्कर एक पत्थर को हटाने के लिए बड़ा कष्ट उठा रहे थे।

"मनुष्य इतने कमज़ोर हो गये हैं! कोई गान्धेरेय इसे आसानी से उठा देता और ये चार मिल्कर भी नहीं उठा पा रहे हैं।" यह सोच अपना सामर्थ्य दिखाने के लिए वह विमान से नीचे उतरा और उसमें से बाहर निकलकर भागा।

वह दो तीन कदम गया था कि नीचे गिर गया। उसी क्षण विमान अदृश्य हो गया। खान में काम करनेवाले जब भागे भागे आये तो उनको एक भुने-से बूढ़े का शरीर दिखाई दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा! मुझे एक सन्देह हो रहा है।

साधारण लोगों के लिए अप्राप्य देवत्व और अमरत्व खोकर, सुखों को छोड़कर, अपनी पत्नी विद्याधरी को भी छोड़कर चारुकेशी यह बुरी मौत क्यों मरा? इस प्रश्न का तुमने जान बूझकर उत्तर न दिया तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"चारुकेशी ने देवत्व तो पाया, पर उसने अपना मानवत्व नहीं खोया था। जो नहीं है, उसको चाहना मनुष्य का स्वभाव है। क्योंकि मनुष्य का यह स्वभाव है, इसलिए मनुष्य आगे बढ़ रहा है। देवलोक में चारुकेशी को कोई प्रत्यक्ष कष्ट न था। उसकी सब इच्छायें पूरी होती रहीं। इसलिए जो इच्छा पूरी न हो सकी, वह सपने में आयी। यह भी मानव-सुलभ इच्छा थी। मनुष्य केवल सुख पाने के ही नहीं जीता, दूसरों को सुख देने के लिए भी जीता है। उसके पिता और साथी इसी तरह जीते थे। विद्याधर लोक में चारुकेशी को दूसरों को सुख देने का मौका नहीं मिला था। इसी मौके को खोजता खोजता, वह अपने देश आया था। कहते हैं, जन्मभूमि स्वर्ग से भी बड़ी है। उसने आते ही, खान में लोगों को काम करते देख, उनकी मदद करनी चाही। इसी में उसकी सार्थकता थी। इसलिए वह पत्नी की बात भूलकर जमीन पर उतरा। जैसे भी देखो, चारुकेशी ने स्वाभाविक काम ही किया था।

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और फिर पेड़ पर जा बैठा। [कल्पित]

कठिन व्रत

एक राजा और रानी के बारह लड़के थे।

चूँकि जो नहीं है, उसके लिए चिन्तित होना मनुष्य का स्वभाव है, इसलिए रानी को बड़ा दुख रहता कि उसकी कोख से लड़की न पैदा हुई थी। एक दिन वह देवी के आलय में गई। देवी की सुन्दर मूर्ति को देखकर उसने सोचा—"यदि मेरे इतनी सुन्दर लड़की हो, तो चाहे मेरे लड़के न हों, तो भी न दुखी होऊँगी।"

तुरत उसका शरीर कम्पित हो उठा—"पापिनी....हूँ....मैं। मैंने कैसे इच्छा प्रकट की। क्यों मैंने यह चाहा!" वह मन ही मन दुखी होने लगी। परन्तु कुछ समय बाद वह यह बात भूल भी गई। उसने सपने में भी न सोचा था कि उसका सपना पूरा होगा।

इसके थोड़े दिनों बाद, रानी को गर्भ हुआ और ठीक समय पर उसने एक लड़की को जन्म दिया। वह लड़की पैदा हुई थी, कि बारह राजकुमार बत्तख बन गये और आकाश के रास्ते वे कहीं उड़ गये। फिर उनका पता उसके बाद कहीं किसी को न मालूम हुआ।

बारह साल हो गये। राजकुमारी बड़ी सुन्दर हुई। उसे देखकर ऐसा लगता था, जैसे मन्दिर की देवी की मूर्ति में प्राण आ गये हों। उसने यह भी सुना कि उसके बारह भाई थे और उसके पैदा होते ही वे बत्तख बनकर उड़ गये थे। परन्तु वह यह न जान सकी कि ऐसा क्यों हुआ था। चूँकि वह हमेशा अकेली रहती थी, इसलिए उसको भाइयों का न होना और

भी खटकता। आखिर उसके बारे में उसकी जानने की इच्छा एक बीमारी-सी बन गई। अपनी लड़की की दुस्थिति माँ भी न देख सकी। उसने जो कुछ हुआ था, वह साफ़ साफ़ बताया।

राजकुमारी ने माँ के बारे में कुछ न कहकर यों कहा—"यानि यदि मेरे भाई बत्तख हो गये हैं, तो उसका कारण मैं हूँ। न मालूम वे बारह वर्षों से कैसे कैसे कष्ट झेल रहे हैं। मैं उनसे जा मिलूँगी और हो सका, तो उनको मामूली आदमी बना दूँगी।"

रानी को यह भय हुआ कि जो एक लड़की है, वह भी शायद उसकी न रहे। इसलिए उसने उसकी रात दिन देखभाल के लिए कई सैनिक नियुक्त किये। परन्तु उस दिन रात को राजकुमारी राजमहल से निकली। जंगल के रास्ते जाने लगी। वह अपने साथ कुछ खाने की चीजें भी लायी। यही नहीं, उसे जंगल में कई तरह के फल भी मिल गये। वह रात भर और दिन भर चलने के बाद एक कुटी में पहुँची। उसके चारों ओर फूल खिले हुए थे। उसके एक भाग में खाना तैयार था और दूसरे भाग में बारह बिस्तर तैयार थे।

जब उसने कुटी में इधर उधर देखा, तो बाहर किसी के आने की आहट सुनाई दी। फिर बारह सुन्दर युवक वहाँ आये। उन सबको उसे देखकर आश्चर्य और दुःख हुआ।

"तुम्हें न मालूम कौन-सा दुर्भाग्य यहाँ लाया है। एक लड़की के कारण हम माँ-बाप से दूर हो गये हैं और दिन भर बत्तख के रूप में हमें जीना पड़ रहा है। बारह वर्ष से हम पर यह शाप है।

इसलिए हमने प्रतिज्ञा की है कि यदि हमें लड़की दिखाई दी, तो हम उसकी जान निकाल देंगे। तुम नादान और सुन्दर दिखाई देती हो। तुम्हारी जान लेना ठीक नहीं, पर हम अपनी प्रतिज्ञा का भंग भी नहीं कर सकते।" युवकों ने कहा।

"हो सकता है। पर मैं तुम्हारी बहिन हूँ। तुम्हारे बारे में मैं कल ही सब कुछ जान सकी। जानते ही तुम्हें खोजती और तुम्हें इस शाप से छुड़ाने के लिए चली आयी हूँ।" राजकुमारी ने प्रेम से कहा।

उसके भाइयों ने शर्म के कारण सिर नीचे कर लिये। "हमने क्यों यों प्रतिज्ञा की थी!"

उस समय दरवाजे के पास एक स्त्री ने आकर कहा—"बस करो! रखे रहो अपनी प्रतिज्ञा। यदि तुमने इस लड़की पर हाथ उठाया, तो समझ लो मैं तुम्हें तालाब की काई बना सकती हूँ। खबरदार, क्या समझ रखा है! यह लड़की तुम्हारा शाप हटाने के लिए आयी है। पर यह आसान नहीं है।

इसलिए उसे बहुत कठिन नियम पालन करने होंगे। जंगल में मिलनेवाली काई लेकर तुम बारह आदमियों के लिए उसे बारह कुड़ते बनाने होंगे। यह काम पूरा करने के लिए पाँच साल लगेंगे। इन पाँच सालों में न उसको हँसना होगा, न रोना होगा, न किसी से बात ही करनी होगी। अगर इसमें से उसने कुछ भी किया, तो व्रत भंग हो जायेगा। इसलिए तुम अपने ही भले के लिए उसको हज़ार आँखों से देखो।" यह कहकर वह स्त्री अन्तर्धान हो गई।

भाई बड़े खुश हुए। उन्होंने बहिन का आलिंगन करके, उसको चूम लिया। बहिन ने अपने भाइयों के लिए व्रत प्रारम्भ कर दिया। उनके लिए आवश्यक कुड़ते बनाने लगी। तीन साल हो गये। उसने तब तक न किसी से बात ही की थी, न हँसी ही थी, न रोई ही थी। तब तक आठ कुड़ते तैयार हो गये थे।

एक दिन जब वह फूलों के बगीचे के पास बैठी काई काट रही थी कि एक राजकुमार ने बाहर के फाटक के पास आकर पूछा—"क्या अन्दर आ सकता हूँ!" उसके सिर हिलाने पर वह अन्दर आया। उसके पास गया। उसने कहा कि वह वन के पार के नगर का राजा था और शिकार पर आया था, यही नहीं, उसने उसको अपनी राजधानी बुलाया और उससे विवाह करने के लिए कहा।

वह जान गई कि उसको उस पर प्रेम हो गया था। सच कहा जाये तो उसको भी उससे प्रेम हो गया था, परन्तु वह अपने भाइयों को भी छोड़कर न जा सकती थी, इसलिए उसने कई बार अपना सिर एक तरफ़ फेर लिया।

आखिर उसको उसकी बात माननी पड़ी। उसके हाथ में हाथ रखकर उसने अपनी स्वीकृति जताई। यदि वह उस युवक राजकुमार के साथ गई भी तो उसके भाई उसका पता मालूम कर लेंगे, यह वह जानती थी।

पर उसके साथ जाने से पहिले उसने कुड़तों को एक टोकरे में और काई को एक और टोकरे में रखा। और उन दोनों को साथ ले लिया। उन टोकरियों को राजा के नौकरों ने

उठाया, फिर राजा ने उसको अपने घोड़े पर सवार कराया और घर की ओर निकल पड़ा। जल्दी ही उनका धूम धाम से विवाह हो गया।

नाक-नक्शे से ही नहीं, परन्तु उसकी चाल ढाल से, हाव भाव से, राजकुमार जान गया था कि हो न हो उसकी पत्नी कोई राजकुमारी थी, विवाह पर, उसे किसी बात का पश्चात्ताप न था। परन्तु उसकी सौतीली माँ ने जो कुछ कहना था कह ही दिया। उसका ख्याल था कि वह किसी जंगली की लड़की थी।

चूँकि राजा हर तरह से स्वतन्त्र था, इसलिए उसने उसकी बातों की परवाह न की। उसने भी अपने भाइयों के लिए कुड़ते बनाने का काम न छोड़ा।

एक साल बीत गया। उसके एक लड़का पैदा हुआ। राजा बड़ा खुश हुआ उस पति पत्नी का सुख सन्तोष और पुत्रोत्सवों को देखकर राजा की सौतीली माँ बड़ी जली। उसने असूया में अपने सौतेले लड़के को अपनी पत्नी से अलग करने की ठानी। पत्नी को उसने बेहोशी की दवा दिलवा दी। जब वह लड़के को
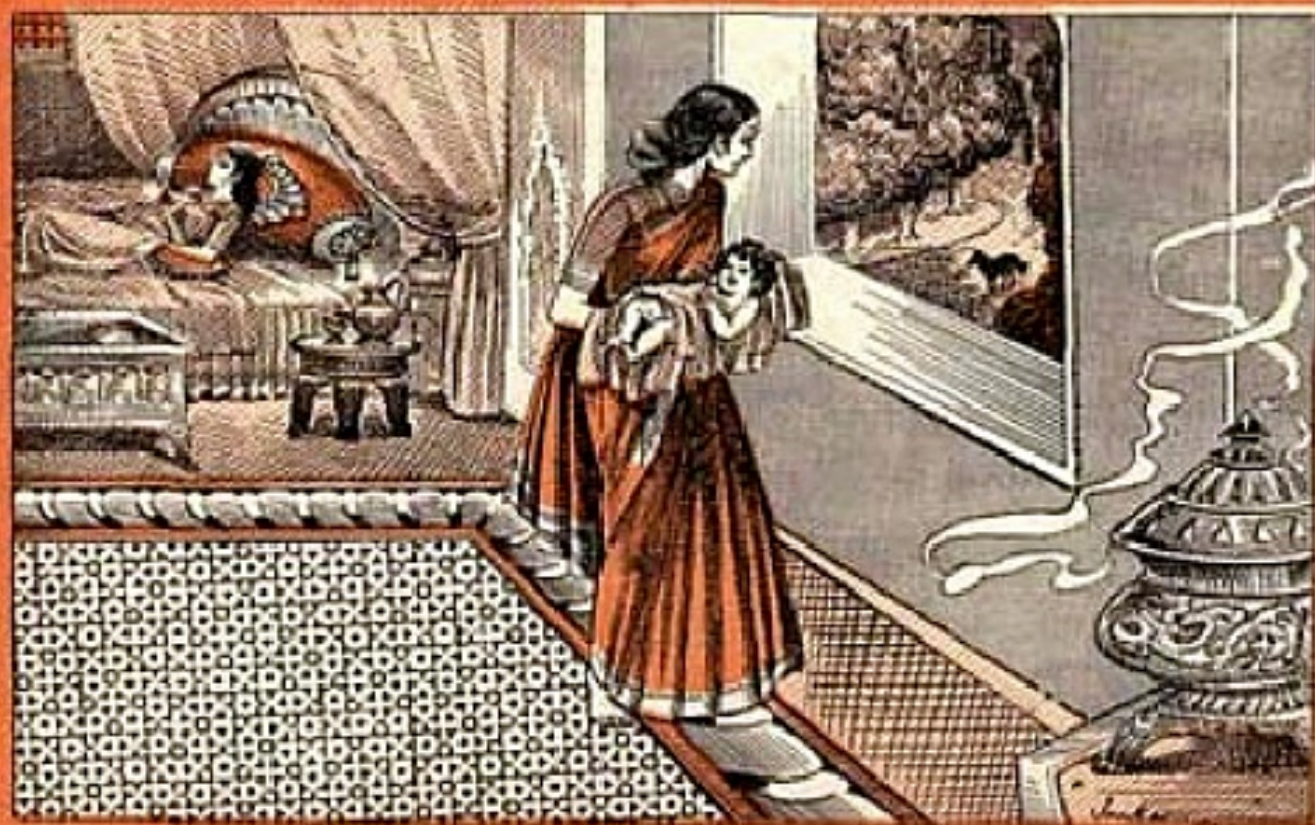
झूठेमूठे आँसू बहाये। वह उसको उसकी पत्नी के पास ले गई।

अपनी पत्नी के मुख पर खून और बच्चे को न देखकर राजा दुःख और भय में हक्का बक्का रह गया। उसने आज्ञा दी कि यह बात किसी को न मालूम हो। उसने अपनी सौतीली माँ से कहा कि वह सब से कह दे कि कोई भेड़िया उसको उठा ले गया था, उसने हाँ तो कह दिया, पर उसने सब से कहा यही कि उसने अपनी बहू के मुख पर खून देखा था और लड़का गायब था।

गायब करने की सोच रही थी कि उसको खिड़की के पास मुख खोले एक भेड़िया दिखाई दिया। उसने उस लड़के को लेकर बाहर फेंक दिया। भेड़िया उस लड़के को मुख में रखकर, जल्दी ही दूर चला गया।

फिर सौतीली राजमाता ने अपनी अंगुली काट ली, राजा की पत्नी के मुख पर खून पोतकर वह चली गई। राजा जब शिकार से आया तो सौतीली माँ ने सामने आकर कहा—"देखा, क्या हो गया!" उसने रोना पीटना शुरु किया,

इन घटनाओं से सब से अधिक दुख राजकुमारी को हुआ था। एक तरफ़ लड़का चला गया था और दूसरी तरफ़ उसके पति को उस पर सन्देह हो गया था। इससे बड़ी दुख की बात और कौन-सी हो सकती है! फिर भी उसने अपने दुःख को रोका, बाहर प्रकट न होने दिया। वह अपने भाइयों के लिए कुड़ते बनाने में लगी रही। कभी कभी उसके भाई पक्षियों के रूप में आते। खिड़की के पास मँडराते और उसे देखकर चले जाते।

एक और वर्ष बीत गया। ग्यारह कुड़ते खतम हो गये। बारहवाँ भी बहुत कुछ पूरा हो गया था। अभी कुछ बाकी ही था कि वह फिर गर्भवती हुई। इस बार उसके लड़की हुई।

जैसा कि पिछली बार हुआ था, वैसा फिर न हो, इसलिए राजा ने पत्नी के कमरे में, चौबीसों घण्टे, दासियों के रहने की आज्ञा दी। परन्तु दुष्ट राजमाता ने इस बार दासियों को घूँस दी और उसने रानी को बेहोशी की दवा दिलवाई। बेहोश माँ को बिस्तर से लड़की उठाकर, इस बार उसका क्या किया जाये, यह सोच ही रही थी कि फिर वही पहिलेवाला भेड़िया दिखाई दिया। यह सोच कि उसकी समस्या कभी की हल हो गई थी, राजमाता ने उस लड़की को उस भेड़िये को दे दिया। भेड़िया उस लड़की को मुख में रखकर, चला गया।

पहिले की तरह राजमाता ने रानी के मुँह पर अपनी अंगुली का खून लगाया और चिल्ला चिल्लाकर उसने सबको जगा दिया। सब को विश्वास हो गया कि रानी स्वयं अपनी लड़की निगल गई थी।

रानी इतनी दुविधा में पड़ी कि उसकी गर्दन पथरा-ही गई। वह जानती थी कि वह अन्तिम घड़ी तक पहुँच गई थी। परन्तु तो भी उसने अपना व्रत भंग न किया और वह बारहवाँ कुड़ता पूरा करने में लगी रही, सिवाय इसके, उसे और कुछ न सूझ रहा था।

इस बीच, राजमहल में तरह तरह की बातें होने लगीं। राजा ने उसको ले जाकर जंगल में, छोड़ आने की ठानी। इसके लिए राजमाता बिल्कुल न मानी। उस तरह की दुष्टा को

चिता पर जला देना ही उसके लिए ठीक सजा होगी। राजकर्मचारी और न्यायाधिकारियों का भी यही सुझाव था। राजा भी क्या करता! उसने आज्ञा दी कि उस दिन शाम को, उसकी पत्नी को चिता पर जला दिया जाये।

निर्णीत समय पर सैनिक आये और श्मशान भूमि की ओर ले गये। वह, वह कुड़ता भी साथ लेती गई, जिसे वह पूरा करती चली जाती थी। यह काम होते ही, वह तैयार हो चिता पर आ खड़ी हुई। "मैं कुछ भी नहीं जानती। राजा को बुलाओ।"

उसको मुख खोलकर, यूँ बोलता देख, सब चकित होकर इधर उधर देख रहे थे, कि कहाँ से बारह पक्षी आये। एक एक करके ये समीप आये और उसने उनको एक कुड़ता पहिनाया और वे एक सुन्दर युवक बन गये। बारह पक्षी, बारह राज कुमार बन गये। उन सबने मिलकर, उसको चिता पर से उतारा।

उसी समय राजा वहाँ आया। वह अभी समझ न पाया था कि क्या हुआ था कि कोई स्त्री से एक गोदी की लड़की लायी और दूसरी एक लड़के को चलाती लायी। उन्होंने उन बच्चों को, उनकी माता को दे दिये। यह सब देखकर, सब के आनन्द की सीमा न रही। राजा, अपनी पत्नी और बच्चों के साथ, घर वापिस आया। न मालूम उसने अपनी सौतेली माँ को, क्या सजा दी, पर हम इतना जानते हैं कि उसने फिर उन दोनों के आनन्द में कभी बाधा न पहुँचायी।

सौ योजन दूर कूदा था, पर हनुमान बिलकुल थका नहीं। उसने ज़ोर ज़ोर से साँसें तक न लीं। इसलिए उसने सोचा—"मैं कितने ही सैकड़ों योजन कूद सकता हूँ। इस समुद्र को पार करना कौन-सी बड़ी बात है?"

वह हरी भरी भूमि पर छोटी छोटी पहाड़ियोंवाले जंगलों में से होता हुआ लंका नगरी की ओर चलने लगा।

लंका के चारों ओर कितने ही तरह के फल और फूलों के पेड़ थे। सुन्दर सुन्दर बाग थे। नगर के चारों ओर सोने के प्राकार थे। ताकि कोई अन्दर न चला आये इसलिए हथियार लिए राक्षस पहरे पर थे। असंख्य दुर्ग थे। बेशुमार बुर्ज, ध्वजस्तम्भ। चमचमाते घर। मनोहर नगर ऊँचाई पर बसा था। इसलिए ऐसा लगता था, जैसे वह देवलोक की कोई नगरी हो।

जब हनुमान ने लंका नगर और उसकी सुरक्षा के लिए पहरा देते राक्षस देखे, तो उसने सोचा—"वानर, इस समुद्र को पार करके कैसे आयेंगे! सौ योजन के समुद्र को सिवाय हनुमान के, अंगद, नील, सुग्रीव ही पार कर सकते थे। औरों के बारे में क्या किया जाय!"

हनुमान को यह भी सन्देह हुआ कि क्या महावीर राम भी यहाँ आकर जीत सकेंगे? सीता को देखने के बाद, इन समस्याओं के बारे में सोचा जा सकता है, यह सोच हनुमान लंका में प्रवेश करने के लिए यकायक छोटा हो गया। यदि बहुत ही छोटा रूप होगा, तो जल्दी जल्दी जा न सकेगा। यदि बहुत बड़ा होगा, तो हर किसी का ध्यान आकर्षित होगा। इसलिए सब दृष्टियों से उचित रूप धारण करके वह आगे बढ़ा। उसने सोचा कि लंका में जाकर सीता को ढूँढ़ने के लिए सब से अच्छा समय रात का समय था।

सूर्यास्त के बाद बिल्ली जितना बड़ा शरीर बनाकर बन्दर की तरह चारों पैरों पर उछलते कूदते नगर में उसने प्रवेश किया। लंका नगर हनुमान को बड़ा आकर्षक लगा। सात आठ मंजिल के घर थे। उनमें सोने चान्दी के स्तम्भ थे। स्फटिक मणियों का उन पर अलंकरण था। जहाँ देखो वहीं मोती, मणि, जड़े हुए थे। इस नगर को वानर कैसे जीत सकेंगे?—हनुमान ने सोचा।

हठात् हनुमान के सामने एक भयंकर आकृति आयी। उसने जोर से पूछा—"कौन हो तुम? क्यों यहाँ आये हो? यदि सच न बोले तो तुम्हारे प्राण ले लूँगी।"

"मैं अपनी बात तो बताऊँगा ही, पर यह बताओ कि तुम कौन हो? इन भद्दी आँखों को लेकर, नगर के द्वार के पास क्या कर रही हो? क्यों मुझे डरा रही हो?" हनुमान ने उस आकृति से पूछा।

"मैं लंका नगरी हूँ। रावण की किंकर हूँ। मैं इस नगर की रक्षा कर रही हूँ।

मुझे जीतकर तुम नगर में प्रवेश नहीं कर सकते। जरूर तुम मेरे हाथ मारे जाओगे।" लंका ने कहा।

"और कुछ नहीं इन बड़े बड़े बुर्जों को, चार दीवारी को, सुन्दर नगर को देखने आया हूँ। सारा नगर देखकर, उसी तरह चला जाऊँगा, जिस तरह आया हूँ। कुछ नहीं करूँगा।" हनुमान ने कहा।

यह सुन, लंका ने उसको अपने हाथ से खूब रगड़ा। हनुमान चिल्लाया और उसने जोर से उसे मुक्का मारा। चूँकि वह उसे मारना नहीं चाहता था इसलिए उसने उसे उतनी जोर से मारा नहीं। परन्तु उसी चोट के कारण लंका हाथ पैर पीटती, आँख, मुख हिलाती, जमीन पर गिर गई।

लंका ने हनुमान को नमस्कार करके कहा—"वानर राजा। तुम बड़े बलवान हो। मुझ पर तुम अपनी शक्ति न दिखाओ। मेरी रक्षा करो। मैं हार गया हूँ। कभी ब्रह्मा ने बताया था कि मुझे कोई वानर आकर जीतेगा और तब से राक्षसों का ह्रास प्रारम्भ हो जायेगा। वह समय अब आ गया है। अब राक्षसों का नाश होकर रहेगा। रावण, सीता को उठाकर लाकर सब राक्षसों का अहित कर रहा है। तुम शहर में जाकर, चाहे जो कुछ करो। सीता को भी देखो।" उसने कहा।

इस प्रकार लंका को जीतकर, प्राकार पर चढ़कर, हनुमान लंका में उतरा। पहिले पहल बाँया पैर आगे रखकर, उसने नगर में प्रवेश किया।

जब वह राजमार्ग पर से जा रहा था, तो उसको रास्ते में वाद्य ध्वनि और हंसना हंसाना सुनाई दिया। घरों को

मालाओं और तोरणों से सजाया गया था। तरह तरह के रंग लगाये गये थे। मदिरा पीकर मस्त हो स्त्रियाँ इस तरह नाच रही थीं कि सहसा गन्धर्व स्त्रियाँ याद हो आती थीं।

राक्षस घरों में स्त्रियों के इधर उधर चलने की, सीढ़ियों पर चढ़ने की ध्वनि हनुमान ने सुनी। कुछ घरों में मन्त्र पढ़े जा रहे थे। एक जगह उसने राक्षस सेना भी देखी।

रावण आदि के महलों के पास जब हनुमान पहुँचा, तब अन्धेरा हो गया था। उसके अन्दर सोने के घर, सोना पुते, मोती जड़े प्राकार थे। भयंकर राक्षस वहाँ भी पहरा दे रहे थे।

हनुमान चुपचाप उस अन्तर्नगर में गया। हरेक घर में रथ, हाथी, घोड़े और सिंहासन आदि थे। जहाँ देखा, वहाँ खूब खा पीकर नशे में राक्षस पुरुष और स्त्रियों को देखा।

वह हरेक घर और बाग को देखता, देखता प्रहस्त, महापार्श्व, कुम्भकर्ण, विभीषण, महोदर, विरूपाक्ष, विद्युन्माली, वज्रदंष्ट्र, शुक, सारण, इन्द्रजित, जम्बुमाली, रश्मिकेतु, वज्रकाय, धूम्राक्ष, विद्युद्रूप, विघन, शुकनास, युद्धोन्मत्त, ध्वजग्रीव, ब्रह्मकर्ण, इन्द्रजिह्वा, कराल आदियों के घर छानकर रावण के घर में गया। उस घर के आंगन में कई रंगों के घोड़े, ऐरावत से हाथी सुन्दर सोने के आभूषण पहिने पहरेदार दिखाई दिये। उस महल में लतागृह, चित्रशाला, क्रीड़ा गृह आदि आदि अलग अलग थे। सब जगह मणियाँ चमक रही थीं। इस घर में पलंग, पीठिकायें, पात्र आदि सब सोने के थे। जगह जगह पुष्पमालायें, सुगन्ध दीप, धूपस्तम्भ आदि

दिखाई दिये। विश्वकर्मा के बनाये हुए घर से अधिक सुन्दर इस संसार में कोई और घर न था। उसे पुष्पक विमान भी वहीं कहीं दिखाई दिया।

अद्भुत पुष्पक विमान को गौर से देखकर हनुमान रावण के शैय्याकक्ष में गया। आधी रात हो चुकी थी। सब सो रहे थे। वहाँ हनुमान को हजार स्त्रियाँ दिखाई दीं। उनमें से कई के हाथ में वाद्य थे। उनमें बहुत-सी सुन्दर थीं। वे सब रावण की स्त्रियाँ थीं। उनमें ऋषियों की स्त्रियाँ, देव स्त्रियाँ, गन्धर्व स्त्रियाँ, राक्षस स्त्रियाँ भी थीं। पर कोई भी जबर्दस्ती नहीं लायी गई थी। हर किसी को रावण पर प्रेम था।

रावण एक शैय्या पर सो रहा था। उसके काले शरीर पर चन्दन पुता था। सोने मढ़े कपड़े उसने पहिन रखे थे। वह मन्दर पर्वत-सा मालूम होता था। हनुमान रावण के पास गया। फिर इस तरह पीछे हटा, जैसे डर गया हो, पासवाली सीढ़ियों पर चढ़कर वह रावण को देखने लगा। यह सोच कि कहीं सोती हुई स्त्रियों में सीता तो न हो, उसने जो नजर फेरी, तो उसको रावण की पलंग पर मन्दोदरी दिखाई दी। उसे ही सीता समझकर हनुमान को एक क्षण के लिए सन्तोष हुआ और दूसरे ही क्षण उसे सन्देह सताने लगा।
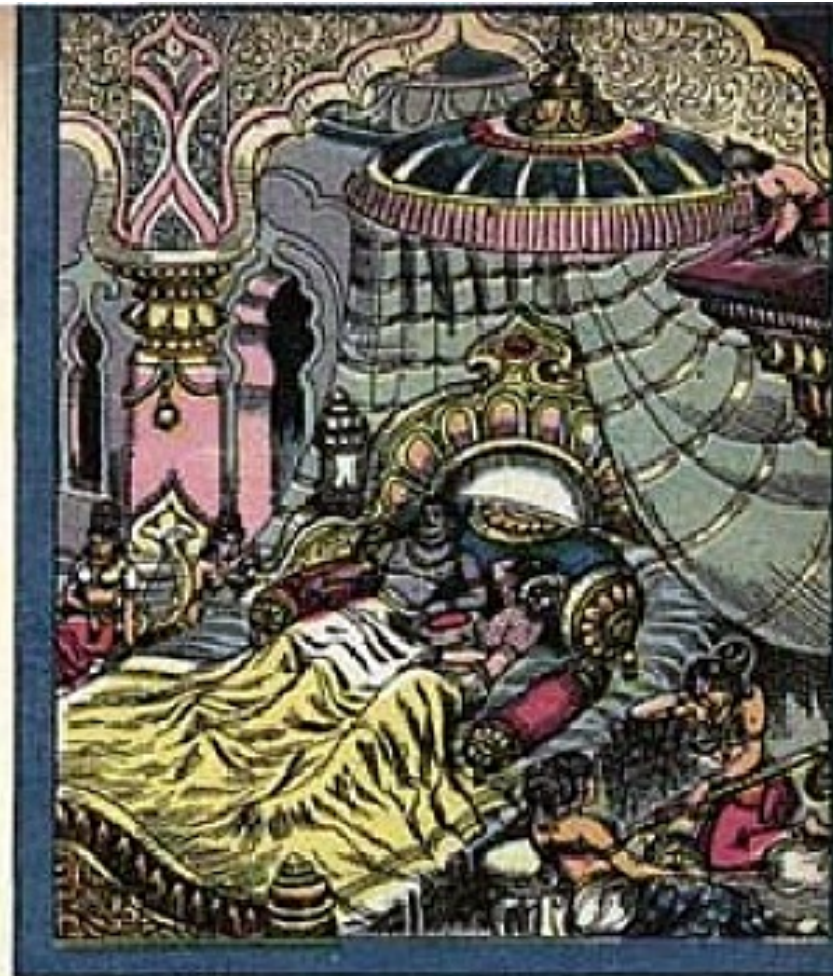
राम के वियोग में सीता कैसे सोयेगी, खायेगी! और ये साज श्रृंगार ये विनोद विलास कैसे! इसलिए हनुमान ने निर्धारित किया कि वह सीता न थी। उसने देखने को बहुत-सी स्त्रियाँ देखी थीं पर उसको सीता न दिखाई दी। सीता यदि जीवित

गलियाँ, मण्डप, बावड़ियाँ तक देख डालीं। शायद सीता लंका पहुँची ही न हो, रावण जब उसको ला रहा था, तो हो सकता है कि वह कहीं समुद्र में ही गिर गई हो—हनुमान को सन्देह हुआ। यदि मैं सीता को देखे बगैर वापिस गया, तो राम मर जायेंगे। उनके भाई मर जायेंगे। सुग्रीव और अंगद मर जायेंगे। इसलिए सीता जब तक न दिखाई देगी, तब तक मैं लंका न छोड़ूँगा। यहीं वन में फल फूल खाता पड़ा रहूँगा यदि सीता न दिखाई दी, तो उपवास करके प्राण छोड़ दूँगा, हनुमान ने निश्चय किया।

रात खतम होने को थी। प्राकार पर चढ़कर, उसने जो मुड़कर देखा, तो उसे अशोक वन दिखाई दिया। उसने सोचा कि वहाँ भी सीता को खोजा जा सकता था। प्राकार पर से उसे अशोक वृक्ष ही नहीं, आम आदि के वृक्ष और लताओं के कुंज दिखाई दिये। तरह तरह की पक्षी भी वहाँ थे। हनुमान बाण की तरह उन पेड़ों पर गया। उसके उछलने से पेड़ों पर से फूल झड़ने लगे। पक्षी कलरव करने

है, तो इन स्त्रियों में न होकर और कहाँ होगी? हनुमान को यह भी सन्देह हुआ कि कहीं सीता ने आत्महत्या न कर ली हो। इतना सब करने के बाद क्या मुझे सीता को बिना देखे ही वापिस जाना होगा—वह सोचने लगा।

हनुमान ने बाकी सारी लंका छान डालने का निश्चय किया। पास ही कई घर थे। कई उनमें दुमंजले थे। कई जगह चबूतरे बने हुए थे।

हनुमान ने सब घरों में घुसकर सब जगह सीता को खोजा। आखिर उसने
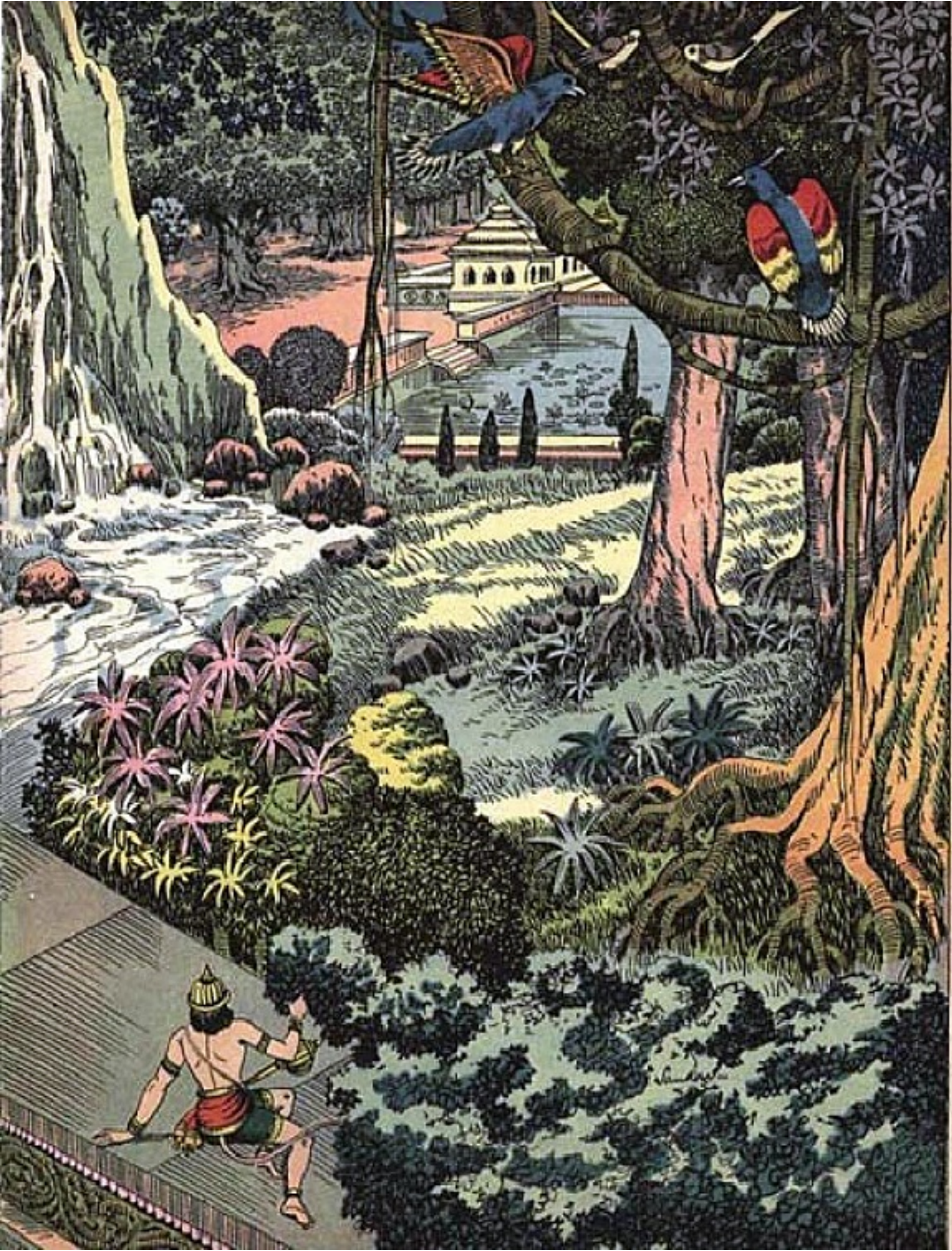
लगे। हनुमान ने पत्तों को हटाकर, फल तोड़कर पेड़ों को झकझोर दिया। लताओं को कुचल दिया।

अशोक वन में अनेक प्रकार के सुन्दर भवन थे। कृत्रिम वृक्ष और बावड़ियाँ थीं। एक जगह एक क्रीड़ा पर्वत भी था। उसके चारों ओर पेड़ थे। उस पर पत्थर के घर थे। उस पर से एक नदी नीचे बह रही थी। उस नदी से दूर कुछ कमल थे। वहाँ ठंडे पानी का एक छोटा-सा तालाब था। उसमें रत्नों की सीढ़ियाँ थीं। मोतियाँ रेत की तरह बिखरी पड़ी थीं। उसके चारों ओर सुन्दर पेड़ और दुमंजले मकान थे।

हनुमान को एक घने पत्तोंवाला सोने के चबूतरेवाला एक शिंशुपा पेड़ दिखाई दिया। उसको सोने के पेड़ों के बीच में एक अशोक वृक्ष देखकर आश्चर्य हुआ। जब वह अशोक वृक्ष हवा के कारण हिलता, तो उसे चूड़ियों की ध्वनि सुनाई पड़ती।

वह शिंशुपा वृक्ष पर चढ़ गया। "यह अशोक वन इतना सुन्दर है। सीता अवश्य यहाँ रोज आती होंगी। उनको वन विहार बहुत पसन्द है। उनके विहार के लिए यह उद्यान अच्छा है। स्नान के लिए पास ही जलाशय है। राम को यादकर दुखी होने के लिए भी यही ठीक जगह है। सीता के लिए यह वन और यह वन सीता के लिए ठीक है। यदि वह जीवित है, तो अवश्य यहाँ आयेंगी। मैं उनको अवश्य देखूँगा भी।" हनुमान ने सोचा।

२५. लुन्ग मेन बुद्ध

होनान, लुन्गमेन घाटी में चौथी सदी में बुद्ध की एक मूर्ति बनाई गई। यह गुफाओं में पहाड़ी पत्थर में बनाई गई है। अफ़ग़ानिस्तान से गये गान्धार शिल्प का इस मूर्ति पर प्रभाव है। इस प्रान्त में और भी बड़ी बड़ी बुद्ध की मूर्तियाँ हैं।

१. विजयकुमार सैनी, शोधी

क्या आप चन्दामामा में वर्ग पहेली शुरू करेंगे? यदि हाँ, तो कबसे?

अभी कोई इरादा नहीं है।

२. सुरेन्द्रकुमार, जामाड़ोबी

भयंकर घाटी में जो प्रथम पृष्ट पर एक जानवर का चित्र है, उसका नाम बतायें।

वह कल्पित है, ऐसा कोई जानवर नहीं होता, इसलिए उसका नाम भी कोई नहीं है।

३. लक्ष्मणदास जी आहुजा, तुमसा

"चन्दामामा" में प्रकाशित धारावाहिक उपन्यास कौन कौन से पुस्तकाकार में मिल सकते हैं?

"विचित्र जुड़वें"

४. दयालदास, मन्दसोर

वार्षिक ग्राहक बनने के लिए पहिले पैसे भेजने पड़ते हैं?

हाँ।

५. श्रीधर शर्मा, बिलासपुर

क्या "चन्दामामा" में छपे धारावाहिक उपन्यास "तीन मान्त्रिक" "भुवन सुन्दरी" पुस्तकाकार में प्रकाशित हो चुके हैं?

नहीं।

६. राजेन्द्रसिंह सप्पाल, सिद्रलीहाट

किष्किन्धाकाण्ड क्या आप रामायण से छापते हैं या और कहीं से।

रामायण से।

७. खेलसिंह पंजाबी, रंगीला, बिलासपुर

"चन्दामामा" की लोकप्रियता का मुख्य कारण क्या है ?

आप और आप जैसे हज़ारों पाठक।

८. सुब्रमनियम, जयशेदपुर

क्या कभी "बेताल कथाओं" का अन्त भी होगा ?

कल्पित कथाओं का तो अन्त नहीं होना चाहिए, क्योंकि कल्पना का कोई अन्त नहीं है।

९ गौतम तामस्कर, बेचेतरा

जो कहानी आप हिन्दी के "चन्दामामा" में छापते हैं, उसे सब भाषाओं के "चन्दामामा" में छापते हैं क्या ?

हाँ।

१०. हरिश्चन्द्र माहेश्वरी, किशनगंज

आप जो बेताल की कथायें लिखते हैं, वह किस आधार पर लिखते हैं ?

जिनके नीचे "कल्पित" होती है—वे साफ़ है, "कल्पित" होती हैं।

११. दिलीपकुमार पलाकार, इलहाबाद

श्री सी. सुब्रह्मण्यम की लिखी पुस्तक "मेरे देखे कुछ देशों की झलक" कहाँ से प्राप्त की जा सकती है। और इसका मूल्य क्या है, कृपया बताइये।

इस किताब का मूल्य डेढ़ रुपया है, (१ रु. ५० न. पै.) और रजिस्टर डाक खर्च के लिए १ रु. १५ न. पै. यह चन्दामामा के पते पर मिलेगी।

Photo by M. A. Mohana Rao

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

करूँ सजावट कैसी !

प्रेषक :
अतार सिंग - नई दिल्ली

Photo by M. A. Mohana Rao

पुरस्कृत परिचयोक्ति

भोली सूरतें एक जैसी !!

प्रेषक :
नई अतारसिंग - दिल्ली

सूर्य का किरीट

सूर्य कभी ग्रहों का राजा समझा जाता था। राजा के फिर किरीट भी तो होना चाहिए। सूर्य का "कोरोना" है और कोरोना का अर्थ किरीट है।

सूर्य के "कोरोना" का अर्थ है, एक कान्ति का घेरा। यह सूर्य के चारों ओर लाखों किलो मीटर की दूरी तक फैला हुआ है। "कोरोना" की कान्ति, चन्द्रमा की कान्ति से कोई आधी होती है। क्योंकि सूर्य की कान्ति उससे कई हज़ार गुना अधिक है, इसलिए हमें यह ग्रहण के समय ही दिखाई देता है। वैज्ञानिकों ने इस घेरे को पहिले पहल सम्पूर्ण सूर्य ग्रहण के समय ही देखा था।

एक समय वैज्ञानिकों ने "कोरोना" के स्वरूप को चित्रित किया था। चूँकि सम्पूर्ण सूर्य ग्रहण दो से आठ मिनिट तक ही रहता है, इसलिए उसका चित्र उतने समय में नहीं बनाया जा सकता था। आज ऐसी कैमरा से उनके सैकड़ों फोटो लिए जा सकते हैं।

सूर्य के चारों ओर कान्ति का घेरा ही नहीं, परन्तु ग्रहण के चारों ओर उठनेवाले ज्वाला तोरण भी ग्रहण के समय दिखाई देते हैं। (चित्र में देखिये) उनमें से कुछ मेघ की तरह होते हैं। कुछ जलयन्त्र की तरह होते हैं। उनमें कुछ सचमुच मेघ हैं, अग्नि मेघ। ये सूर्य के साथ वायुमण्डल में घंटों तैरते रहते हैं। ये कभी कभी कई घंटे रहते हैं और फिर पिघल जाते हैं। उनका परिमाण बहुत बड़ा होता है।

फिर कुछ सूर्य से निकलनेवाली ज्वालायें हैं। ये लाखों किलो मीटर की दूरी तक जाती हैं। वैज्ञानिकों ने देखा कि १९३८ में निकली एक ज्वाला, १५ लाख किलो मीटर दूर गई थी।

टेलिस्कोपों के आविष्कार के बाद सूर्य के बारे में कितनी ही बातें मालूम हुईं। इससे पहिले सूर्य को सफ़ेद जलता लोहे का गोल समझा जाता था। परन्तु सूर्य की गर्मी में कोई भी पदार्थ घन रूप में नहीं रह सकता। सूर्य जलती वायुओं का समूह है। लाखों डिग्री की गरमी में वायु बिना हिले डुले नहीं रह सकती। सूर्य में स्थित वायु तेज़ी से चलती है। उस शक्ति के सामने भूमि पर उठनेवाली वायु की शक्ति कुछ भी नहीं है।

सूर्य करोड़ वर्षों से यूँ ही है। अब तक उसमें प्रति क्षण वायु संचलन होता ही रहा है। सूर्य में आनेवाले तूफ़ानों की तुलना में, हमारी भूमि के तूफ़ान बच्चों की साँस की तरह हैं।

सूर्य में बड़े बड़े धब्बे बनते रहते हैं। उनसे बृहत् विद्युत्प्रवाह विश्व के अन्तरिक्ष में आता रहता है। सूर्य में कभी कभी इतने विस्फोटन होते हैं कि जलती वायुयें चार सौ किलो मीटर प्रति सेकन्ड तेज़ी से आकाश में उठती हैं। (स्पुतनिक की प्रारम्भिक गति ११ किलो मीटर प्रति सेकण्ड है) दस मिनिट में ज्वालायें जितनी दूर भूमि से चन्द्रमा है, उतनी दूर चली जाती हैं। चन्द्रमा जब इनके रास्ते में आता है तो वे पूरी तरह जल उठती हैं।

ग्रहण के न होने पर भी वैज्ञानिक सूर्य से निकलने वाले इन ज्वालाओं को अध्ययन करने का मार्ग निकाल लिया है। इसके लिए अलग टेलिस्कोप भी हैं। इन ज्वालाओं का फोटो ही नहीं, सिनेमा भी निकाला गया है। कई घंटे, दिन में होनेवाले सौर ज्वालाओं में थोड़ी देर में दिखा दिया जाता है।

सूर्य ज्वालाओं का और सूर्य के धब्बों का कुछ सम्बन्ध मालूम होता है। सूर्य का घटना, बढ़ना, ग्यारह वर्ष में एक बार होता है। ये सूर्यबिम्ब की कान्ति की तुलना में काले होते हैं। इसलिए हम इनको देख नहीं पाते। उनकी गरमी ५,००० डिग्री होती है। यदि हम उन्हें देख सकें, तो हमें सूर्य एक थाल की तरह दिखाई देगा।

विशेषज्ञों का कहना है कि गत, अरब वर्षों से सूर्य की गरमी बिल्कुल भी नहीं बदली है। इसलिए कहा जा सकता है कि कुछ और सौ वर्षों तक सूर्य के "किरीट" में बदल नहीं होगा।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

मार्च १९६४ : : पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ जनवरी १९६४ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वडपलनी, मद्रास-२६

जनवरी – प्रतियोगिता – फल

जनवरी के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: **करूँ सजावट कैसी!**

दूसरा फ़ोटो: **भोली सूरतें एक जैसी!!**

प्रेषक: **अवतारसिंग "प्रेमी"**
१६०४, लक्ष्मीबाई नगर, नई दिल्ली.

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

इस कमरदर्द को दूर करने के लिये

अमृतांजन

लगाइये

अमृतांजन बहुत जल्दी और बहुत अच्छा आराम पहुंचाता है क्योंकि यह आरामदायक १० दवाइयों का मिश्रण है। एक एक बार आपको इतना कम चाहिये कि एक शीशी आपके घर में महीनों चलेगी। करीब ७० वर्ष से यह विश्वासी घरेलू दवा अमृतांजन, मोच, सरदर्द, सीने के ठंडक और दर्द, जुकाम और दूसरे तमाम दर्दों में भी अचूक है।

मौसम के बदलने और रोज रोज के कामकाज के दबाव से दर्द, जुकाम आदि पैदा होते हैं। एक शीशी अमृतांजन बराबर पास रखिये।

अमृतांजन

१० दवाइयों का मिश्रण है

अब अमृतांजन की शीशी गत्ते की नई डिबिया में लीजिये। यह नकल से बचानेवाली 'स्क्रू' कैप से सील बंद है।

अमृतांजन लिमिटेड

मद्रास • बम्बई • कलकत्ता • दिल्ली

JWT/AM 2334A